सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 13 ▪ ▪ अंक : 7 ▪ ▪ 5 अक्टूबर : 2016 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

दुर्ग में केयुप का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

मुनि मण्डल

साध्वी मण्डल

दुर्ग में केयुप का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

सव्वे जीवा वि इच्छांति जीविउं न मरिज्जिउं।
तम्हा पाणिवहं घोर निग्गंथा वज्जयंति णं।।

– दशवैकालिक 6/11

सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना नहीं इसलिए निर्ग्रन्थ मुनि घोर प्राणीवध का परित्याग करते हैं।

All living beings desire to live. Nobody likes to die. Therefore. Self-restraining Persons refrain from thr great sin of Killing living beings.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	04
2. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	05
4. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	08
5. श्री गुरु गौतम समरिये	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	10
6. गुरु गौतम स्वामी के रास का इतिहास	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	14
7. आतिशबाजी से नुकसान ही नुकासान	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	18
8. सुरादेव श्रावक	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	23
9. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	25
10. समाचार दर्शन	संकलन	26-37
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	38

नूतन वीर संवत् 2543 की हार्दिक शुभकामनाएँ

परमात्मा महावीर निर्वाण पर्व
30 अक्टूबर 2016
गुरू गौतम स्वामी केवलज्ञान पर्व
31 अक्टूबर 2016
ज्ञानपंचमी पर्व
05 नवम्बर 2016

नूतन वीर संवत् के मंगलमय प्रभात में दादा श्री जिनकुशलसूरिजी म.सा. के शिष्यरत्न विद्वद्वर्य आशुकवि उपाध्याय श्री विनयप्रभ द्वारा रचित महाप्रभावशाली महामंगलकारी गौतम रास का श्रवण, पठन एवं चिन्तन करके अपने नये वर्ष को धर्म, साधना, प्रेम, दया, परोपकार और शांति से परिपूर्ण बनाएँ।

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 13 अंक : 7 5 अक्टूबर 2016 मूल्य 20 रू.

संयोजन :
मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु हमारे प्रतिनिधि
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 095000 92592

नवप्रभात

एक आदमी सागर के किनारे घूम रहा था।

उसकी नजर वहाँ एक पेड पर बैठी कोयल पर पड़ी! उसकी कुहुक में बहुत मधुर संगीत का निनाद था। उसे उसका कण्ठ उसे बहुत पसन्द आया। पर रूप पसन्द न आया। उसका कालापन उसे अखरने लगा।

वह कोयल के पास गया और कर्कश स्वर में कहने लगा– अरी कोयल! तूं काली न होती तो कितना अच्छा होता! कालेपन के महादुर्गुण ने तेरे कण्ठ के माधुर्य को फीका कर दिया है।

आगे उसे मिला सागर! बहुत गहरा! लहरों की गति ने उसके चित्त को प्रसन्नता से भर दिया। सागर के घोष ने उसे वहाँ खडे रहने को मजबूर कर दिया था। ओह! कितना मनमोहक दृश्य है! कितनी अगाध राशि है! देखते रहो... देखते रहो... मन न भरे! तृप्त न हो! पर दो पल बाद उसका चेहरा उसके प्रति कडवाहट से भर गया। उसे अब सागर देखना भी अच्छा नहीं लग रहा था। क्योंकि सागर के पानी का स्वाद खारा था।

वह सागर की ओर तुच्छ दृष्टिपात करता हुआ बोला– अरे सागर! तूं खारा न होता तो कितना अच्छा होता!

तभी उसकी नजर गुलाब के पौधे पर पड़ी। खिले गुलाब के फूल को हवा की दिशा में लहराते देख कर उसका मन सुगन्ध से भर उठा। मन ललचाने लगा। वह उसकी सौंधी सुगन्ध में भीगने के लिये लालायित हो उठा। तभी उसकी नजर पुष्प के पास उगे तीखे कांटें पर पडी। और उसका मन पीडा से भर उठा।

वह बोला– अरे गुलाब! तुझमें कांटें न होते तो कितना अच्छा होता!

सुन कर तीनों एक साथ उस आदमी से बोल उठे– अरे इन्सान! तुझमें दूसरों की कमियाँ देखने की आदत न होती तो तूं कितना अच्छा होता!

वह आदमी अपना मुँह लटकाकर चलता बना।

यह रूपक बडा महत्वपूर्ण है। हमारी मुश्किल यह है कि हमें सदा दूसरों की कमियाँ ही नजर आती है। हजार अच्छाईयाँ हो और एक कमी हो तो हमारी नजरों में कमी खटकती है। उसकी अच्छाई हमें नजर नहीं आती।

दूसरों के बडे गुण छोटे और छोटे दोष बडे नजर आते हैं। यह हमारे दृष्टिकोण का विकार है। महत्वपूर्ण दृश्य नहीं, हमारी दृष्टि है। अपनी दोष-दृष्टि को गुणग्राही बनाने में ही जीवन की सार्थकता है।

48
संस्मरण

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

पाट पर बिराजमान पूज्य गुरुदेवश्री हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। आज हमें थोडी देर हुई थी। वंदन के पश्चात् वायणा का आदेश लिया गया। इसके साथ ही पूज्यश्री की स्वानुभव-वाणी संयुत वांचना का प्रारंभ हुआ।

पूज्यश्री सन् 1948 के अनुभवों का विस्तार से वर्णन फरमा रहे थे।

उन्होंने फरमाया- महाराष्ट्र प्रान्त बरार क्षेत्र में मेरा विचरण चल रहा था। चातुर्मास का निर्णय करना था। आसपास के क्षेत्रों की विनंती भारी थी। गच्छवाद का वातावरण नहीं था। विनंती करने वालों में खरतरगच्छ, आंचलगच्छ, तपागच्छ आदि सभी गच्छों व सम्प्रदायों के लोग सम्मिलित थे। खामगांव संघ काफी समय से विनंती कर रहा था। लाभालाभ देख कर खामगांव संघ की विनंती स्वीकृत की गई। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत की अनुज्ञा से चातुर्मास प्रारंभ हुआ। प्रवचन में न केवल खामगांव के लोग होते, आसपास के क्षेत्रों के लोग बडी संख्या में उपस्थित होते। खामगांव के जैन श्री संघ में अधिकतर श्रावक आंचलगच्छ के अनुयायी थे।

मैंने पूछा- जब सभी गच्छ साथ थे और उसमें भी आंचलगच्छ की बहुलता थी तो पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना में समस्या नहीं आई! क्योंकि मुझे पता था कि खरतरगच्छ व तपागच्छ चतुर्थी तिथि को संवत्सरी महापर्व की आराधना करते हैं जबकि आंचल गच्छ पंचमी को!

मैंने अपनी जिज्ञासा स्पष्ट करते हुए कहा- फिर क्या दोनों दिन आराधना करवाई गई! या फिर चेन्नई में आपकी प्रेरणा से उस समय के श्री संघ द्वारा लिये गये बारी बारी से चतुर्थी व पंचमी की आराधना के निर्णय का अनुकरण करते हुए यहाँ पर भी वही समाधान निकाला गया!

पूज्यश्री ने फरमाया- वि. सं. 2005 का पंचांग यदि तुम देखोगे तो तुम्हें तुम्हारे प्रश्न का समाधान प्राप्त हो जायेगा।

मैंने गुरुदेवश्री से पंचांग अवलोकन की अनुमति चाही। यों चलती वांचना में बीच में किसी भी कारण उठना, अविनय का प्रतीक था। पर अति उत्कण्ठा और उत्सुकता को मेरी आंखों व चेहरे पर पढा जा सकता था। गुरुदेवश्री ने मेरे सवाल का सीधा उत्तर न देकर प्राचीन पंचांग पर जाकर मुझे टिका दिया था। इस कारण उस वर्ष के पंचांग को देखने के सिवाय मेरे पास कोई दूसरा विकल्प न था।

उस वर्ष का पंचांग मेरे पास था ही! वि. सं. 2001 से लेकर वि. सं. 2100 तक का अर्थात् कुल मिला कर 100 वर्ष का पंचांग गतवर्ष ही मेरे पास ज्योतिष के अध्ययन के दौरान प्राप्त हुआ था।

गुरुदेवश्री ने प्रेमपूर्ण निगाहों से मेरे चेहरे को देखा और

12 वीं पुण्यतिथी पर हार्दिक श्रद्धासुमन

परम आदरणीय छत्तीसगढ़ रत्न शिरोमणी महत्तरा गुरूवर्या

प.पू. मनोहर श्रीजी म.सा. एवम्

परम् पूज्यनीया मधुर प्रवचनकार

अरूणोदया श्रीजी म.सा.

की 12 वीं पुण्य तिथी प्रसंगे पुण्योत्सवे

गुण स्मरण.... गुण संवेदन .... गुण स्पर्शन

दोनों गुरूवर्या श्रीजी के

चरण युगल में कोटि कोटि वंदना एवम्

भावपूर्ण श्रद्धांजलि भावांजलि

पावन निश्रा

आज्ञा प्रदाता
आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

प.पू. अभ्युदयाश्रीजी म.सा.
प.पू. स्वर्णोदयाश्रीजी म.सा.
प.पू. सत्वोदयाश्रीजी म.सा.

श्रद्धावंत

प.पू. अभ्युदयाश्रीजी म.सा. प.पू. स्वर्णोदयाश्रीजी म.सा.
प.पू. सत्वोदयाश्रीजी म.सा.

एवम् समस्त बाड़मेर जैन श्रीसंघ नवसारी गुजरात

खरतरगच्छाधिपति परम पुज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से आदेशानुसार नवसारी चातुर्मास कराने का अवसर मिला। बाड़मेर जैन श्री संघ नवसारी स्थित मणीधरी भवन अंबीका नगर सोसायटी परगाह रोड़ में 6-7-2016 को भव्यातिभव्य प्रवेश हुआ उस समय से लगातार जिन शाशन की शोभा में अभिवृद्धि करके चार चाँद लगाए हैं। प्रवेश के दिन से लगातार महामंगलकारी आयंबील, (सांकली आंयबल) और सांकली तेले (अट्ठम) की तपश्चर्या लगातार निर्विघ्न बराबर चल रही है । चातुर्मास के इन दो मास में पंच परमेष्ठी तप, पचरंगी तप, अक्षयनिधी तप और पर्युषण में बहुत सारी तपश्चर्या हुई है।

सौजन्य से लहेरीदेवी माणकमलजी छाजेड़ परिवार सियाणी वाले

पारसमल, मीनादेवी, राजेष, कु. श्वेता, प्रतिक छाजेड़ परिवार

सियांणीवाले हाल नवसारी गुजरात

पर्यूषण महोत्सव

श्री सकल संघ

आमंत्रण पत्रिका खामगांव शहर.

'खामगॉंव' शहर से

हरिसागर सूरीश्वरजी महाराज

शिष्यरत्न—

प्रसिद्ध वक्ता समाज सुधार प्रेमी,

मुनी पुङ्गव पं० श्रीमान्

—:कान्ति सागरजी महाराज:—

—: श्री पर्युषण पर्व की महत्ता :—

—: कार्य-क्रम :—

खामगांव जैन श्री संघ का सादर

जय जिनेन्द्र वंचनाजी

निर्दोष उत्सुकता का अनुभव कर अनुमति दी। मैं शीघ्र ज्ञान भंडार की आल्मारी के पास पहुँचा और 100 साल का वेंकटेश्वर पंचांग लेकर गुरुदेवश्री के पास पहुँचा। मैंने शीघ्र वि. सं. 2005 का पंचांग खोला। भाद्रपद मास की गणित देखी। तिथि, वार, नक्षत्र देखा पर मुझे कुछ समझ न आया।

तभी गुरुदेवश्री ने अपने पास से उस समय खामगांव श्री संघ द्वारा पर्युषण पर्वाधिराज की आराधना हेतु प्रकाशित पत्रिका निकाल कर दिखाई। पत्रिका देख कर मैं दंग रह गया।

इतने वर्ष पुरानी पत्रिकाऐं गुरुदेवश्री के संग्रह में सुरक्षित है! पत्रिका व पंचांग का सूक्ष्म अवलोकन करने से सारी बातें समझ में आ गई।

उस वर्ष संवत्सरी महापर्व की आराधना मंगलवार ता. 7 सितम्बर 1948 को हुई थी। खरतरगच्छ व तपागच्छ द्वारा मान्य पंचांगों के अनुसार उस दिन चतुर्थी थी जबकि आंचलगच्छ द्वारा मान्य पंचांग गणना के अनुसार उसी दिन पंचमी थी।

सकल श्री संघ ने एक ही दिन आराधना की थी। तिथि-भेद का घटनाक्रम अपनी अपनी परम्परा तक सीमित था। मैं मुस्कुरा उठा कि अनायास ही सारी परम्पराऐं एक हो गई थी। मेरे मन में आया- कितना अच्छा हो! सारी परम्पराऐं एक ही तिथि को संवत्सरी महापर्व की आराधना करें।

विषय से संबंधित चल रही चर्चा में मैंने अपना यह मानस-प्रश्न गुरुदेवश्री से पूछ ही लिया

(क्रमशः)

प्रीत की रीत

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री वासुपूज्य जिन स्तवन

दर्शन ज्ञानादिक गुण आत्मना रे,
प्रभुता लयलीन।
शुद्ध स्वरूपी रूपे तन्मयी रे,
तसु आस्वादन पीन ॥ ४॥

दर्शन और ज्ञान जो कि आत्मा के गुण है। वे प्रभु की प्रभुता में तल्लीन बने। शुद्ध स्वरूपी परमात्मा में तल्लीन बने उसी का स्वाद चखे, यह शुद्ध भाव पूजा है।

प्रस्तुत पद्य में चेतना का शुद्ध चेतना के प्रति उत्कृष्ट समर्पण का स्वर छलका है। पूजा का अर्थ ही समर्पण है। सामान्य इन्सान भी जब किसी व्यक्ति को समर्पित होता है तो अपना सर्वस्व उस पर अहोभाव से न्यौछावर कर देता है। जो भी अद्‌भुत सामग्री है उसे देने में हिचक का अनुभव नहीं करता। जब सामान्य इन्सान भी इतना समर्पित होता है तो भक्त का जीवन तो विशिष्ट है। उसकी विशिष्टता उसके समर्पण में निहित है। इस पद्य में भावपूजा को स्पष्ट करते हुए बताया कि दर्शन और ज्ञान स्वयं आत्मा के गुण हैं। आज तक वातावरण विकृत मिलने के कारण आत्मगुण आत्मोन्मुखी रहने की अपेक्षा पदार्थवादी ही रहे है परंतु अब प्रभु दर्शन की प्रभुता में लीन बनने लग गये।

हमने आज तक आत्मा ही अपना मित्र और आत्मा ही अपना शत्रु है, ऐसा सुना है पर इसका अनुभव नहीं किया है। दृष्टिकोण को बदलने के लिये कुछ ऐसे सूत्र है जिनका प्रयोग करके हम आत्मा को मित्र बना सकते हैं। अगर विपरीत हमारा आचरण रहे तो इसे शत्रु भी बनाया जा सकता है। जब चेतना में राग द्वेष की धारा समाप्त होती है तब आत्मा आत्मा की मित्र बन जाती है। अथवा यों कहें कि नियंत्रित चेतना हमारी मित्र है। जब व्यक्ति मात्र स्वयं की चेतना की परिक्रमा प्रारंभ करता है तब वह आत्म मित्र और आत्म स्थित हो जाता है। जगत की परिक्रमा हमारी सबसे बडी पराजय है।

चैतन्य का अनुभव शुद्ध भाव पूजा है। चैतन्य के अनुभव में इन्द्रियों की मूर्च्छा, पदार्थो की आसक्ति प्रियता और अप्रियता के भाव स्वत: समाप्त हो जाते हैं। पदार्थो की उपस्थिति में भी वह उनसे तटस्थ हो जाता है। अतृप्ति की व्यथा स्वत: समाप्त हो जाती है। चेतना एक नये जगत में पदार्पण करती है। संसार की अनादिकालीन परिक्रमा से जो नहीं मिला था, वह उसे शुद्ध भाव दशा में उपलब्ध हो जाता है। मात्र चैतन्य का अनुभव करना, शरीर के कण-कण में ले जाकर चैतन्य का अहसास करना ही शुद्ध भाव पूजा है। जब इस प्रकार की शुद्ध भाव पूजा का जागरण होता है तो इन्द्रियाँ रहते हुए भी उनका अस्तित्व शून्य हो जाता है।

शुद्ध तत्व रस रंगी चेतना रे,
पामे आत्म स्वभाव।
आत्मालंबी निजगुण साधतो रे,
प्रगटे पूज्य स्वभाव ॥५॥

परम शुद्धता के प्रतीक अरिहंत और सिद्ध परमात्मा में जब चेतना पूर्णतया एकमेक हो जाती है, तब आत्म स्वभाव को उपलब्ध कर लेती है। इस प्रकार साधक आत्मावलंबी होकर ज्ञानादि गुणों की साधना करता हुआ अपने मूल स्वभाव को प्रकट कर लेता है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने जागृत चेतना ही परमात्मा के अवतरण को स्वयं में अवतरित कर सकती है, इसे स्पष्ट किया है। चेतना के क्रमिक विकास की ओर इसमें ध्यान केन्द्रित किया है। वही परम प्रभु के आनंद में स्वयं को रमा सकता है जिसका चैतन्य जागृत हो गया हो। वर्तमान में पदार्थ का विकास हुआ, सुविधाओं का भरपूर विकास हुआ, परंतु इस पदार्थ की एकांगी विकास प्रक्रिया से नि:संदेह अध्यात्म खडी हुई। सुज्ञ और चतुर व्यक्ति निश्चित ही समस्याओं की सुलझाना चाहता है परंतु ये तभी सुलझती है जब स्वयं की चेतना को देखने का और उसमें रमने का रस पैदा होता है। जब तक रस पैदा नहीं होता, आदमी हजार बार सुन ले कोई परिवर्तन नहीं आता। आत्मदर्शन के लिये चेतना को प्रतिपल सतर्क और सावधान रखें।

सूफी संत की एक कहानी है। कहते हैं संत हफीज अपने साथियों सहित गुरू महाराज की सेवा में थे। एक बार सारे शिष्य सो रहे थे। मात्र हफीज जाग रहे थे। अचानक गुरू के मन में ज्ञान की नई स्फुरणा हुई। उन्होंने शिष्यों को निमंत्रित किया। सारे शिष्य चूंकि सो रहे थे अत: सुन नहीं पाये। मात्र हफीज ही जाग रहे थे। वे तुरंत निकट आये। करबद्ध गुरूदेव के चरणों में पहुँचे और अनुभव की किरण देने की प्रार्थना की। गुरू ने अपनी साधना से प्राप्त ताजे ज्ञान नवनीत को अपने शिष्य के हृदय में आरोपित कर दिया। अद्भुत ज्ञान संपदा पाकर वह निहाल हो गया। एकाध घंटा बीता कि गुरू ने पुन: शिष्यों को पुकारा। शिष्य तो सारे गहरी नींद में थे। कौन सुनता?मात्र हफीज ने सुना और सेवा में पहुँच गया।

आनंद मग्न गुरूदेव ने कहा-मेरे अनुभव में अभी-अभी कुछ और ज्ञानरश्मियाँ छलकी है। तुम उन्हें प्राप्त कर लो। अंजलि बद्ध हफीज पुन: सतर्कता से खडा हो गया। गुरू ने अत्यन्त वात्सल्य भाव से सारा नवीन ज्ञान शिष्य में उंडेल दिया।

हफीज की उपलब्धि में उसकी जागृति ही मुख्य कारण बना। दो चीज है-एक ओर आत्मा तो दूसरी ओर शरीर! जितने अधिक हम देहाश्रित होंगे, उतना ही अधिक हम प्रभु से या निश्चय नय से कहे तो स्वयं से दूर होंगे। जितना ज्यादा ध्यान आत्मा की ओर लगेगा, उतने ही हम अपने शुद्ध स्वरूप के निकट पहुँचेंगे। ऐसे में आत्मा और अर्हत् अलग-अलग नहीं है। आत्मा और परमात्मा में कोई भिन्नता नहीं है। जो आत्मा है वही परमात्मा है। जो स्वयं को जानता और देखता है, वह वीतरागी बन जाता है। परमात्मा का दर्शन जो कर लेता है। उसकी जन्म-जन्म की मोहनिद्रा टूट जाती है। वह स्वयं को उपलब्ध हो जाता है।

OPEN BOOK EXAM 2016, DURG

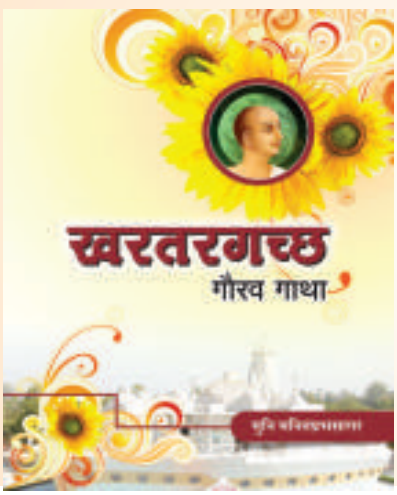

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा लिखित खरतरगच्छ गौरव गाथा पुस्तक पर ओपन बुक एग्जाम का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ एवं संघ शास्ता चातुर्मास समिति की ओर से किया गया है, इस पुस्तक में खरतरगच्छ के विविध महापुरूषों का जीवन चरित्र लिखा गया है। पुस्तक जमा कराने की अंतिम तिथि 30 नवम्बर 2016 है, पुस्तक प्राप्ति हेतु संपर्क- पदम बरडिया-09827159311, एवं मनीष दुग्गड़-9425234450 करें, पुस्तक एवं प्रश्न पत्र का मूल्य मात्र 20/- रुपये रखा गया है।

केवल ज्ञान पर्व पर विशेष

श्री गुरु गौतम समरिये

आचार्य जिनमणिप्रभसूरिजी म.

नालन्दा के पास गुव्वर ग्राम में गौतम गौत्रीय वसुभूति के घर पृथ्वी माता की कुक्षि से ज्येष्ठा नक्षत्र में ई. स. पूर्व ६०७ में जन्में इन्द्रभूति–गौतम गणधर जिन शासन के परम श्रद्धेय 'गुरु' हुए हैं। वे ब्राह्मण थे। बचपन में ही उन्होंने वेदों, पुराणों, न्याय–व्याकरणादि का अध्ययन कर लिया था। अध्ययन के पश्चात् अध्यापन–प्रवृत्ति में दत्तचित्त होकर ५०० शिष्यों को अभ्यास कराने लगे।

वे पूरे भारत में घूमे और जगह–जगह उन्होंने शास्त्रार्थ कर अपनी विजय पताका फहराते रहे। क्रियाकांडी मीमांसक इन्द्रभूति प्रतिदिन यज्ञ करते व करवाते थे!

इन्द्रभूति आदि यज्ञ करवा रहे थे! तभी भगवान महावीर ने केवल ज्ञान की उपलब्धि के बाद प्रथम देशना के निष्फल जाने पर रात्रि को सुदीर्घ विहार कर अपापा नगरी के महसेन उधान में पधारे। परमात्मा की अमृत वर्षा का पान करने जन समुदाय उमड़ पड़ा। जन–जन की जीभ पर परमात्मा का नाम था। अपार जनमेदिनी समवशरण की दिशा में चल पड़ी। देवगणों की विशाल संख्या के साथ संपूर्ण आकाश उन्हीं से अच्छादित हो गया।

इन्द्रभूति आदि ने विचार किया– हमारे यज्ञ में उपस्थित होने के लिये देव समूह इधर ही आ रहा है। परन्तु देवगण तो समवसरण की ओर बढ चले। यह देख इन्द्रभूति मन में चिंतन करने लगे– ये देव किधर जा रहे हैं ?पता चला कि महसेन वन में कोई सर्वज्ञ महावीर आये हैं। उन्हीं के दर्शन–वंदन–सेवा–अर्चना और प्रवचन–श्रवण हेतु ये सब जा रहे हैं। यह सुन इन्द्रभूति अत्यन्त आहत हुए। इस धरती पर मेरे सिवा और सर्वज्ञ है ही कौन ?आवेश में आकर अपनी शिष्यसंपदा के साथ महावीर से शास्त्रार्थ करने चल पड़े। चिन्तन यही था कि यह कोई इन्द्रजालिक होगा। मैं अभी जाता हूँ और उसके इन्द्रजाल को नष्ट कर डालता हूँ। जब समवशरण की रचना देखी तो उस नयनाभिराम दृश्य को देखकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये।

अन्दर जाकर जब परमात्मा का प्रशम–रस से परिपूर्ण असाधारण तेजोद्दीप्त मुखमंडल को देखा तो हृदय म? गंगा की धारा बहने लगी। ओह! ऐसा दिव्य तेज! अपूर्व भामंडल युक्त मुखमंडल ! अनिर्वचनीय प्रभा ! ये तो वास्तव में सर्वज्ञ प्रतीत होते हैं। इनके तेज के सामने मैं फीका पड़ गया हूँ। सूर्य के सामने तारे जैसी स्थिति मेरी हो गई है। मैं बिना विचारे जल्दबाजी में आ गया। मैं जब इनके दर्शन से ही इतना अभिभूत हूँ तो जब इनके अवग्रह में जाकर चरणों में बैठूगा, वाणी सुनूंगा, तब कितना विवश हो जाऊँगा मैं ? मैं कैसे शास्त्रार्थ कर पाऊँगा ? अब तो मैं वापस भी नहीं जा सकता हूँ! मैं क्या करूं ?मेरा सारा यश धूल–धूसरित हो जाएगा।

उधेड़बुन में फँसे इन्द्रभूति को उसी समय परमात्मा महावीर ने संबोधित किया– इन्द्रभूति गौतम ! तुम कुशल तो हो?परमात्मा के संबोधन में अपना परिचय जानकर चौंका ! मैं कभी इनसे मिला नहीं, फिर ये मुझे कैसे जानते हैं! थोडी–सी देर के लिये अपनी विद्वत्ता के भ्रम में उलझ गया ! विचार किया दिग्–दिगन्त तक परिव्याप्त है मेरी ख्याति ! कौन नहीं जानता मुझे !

इन्द्रभूति परमात्मा की तेजस्विता से उन्हें सर्वज्ञ सोचते तो कभी अपने अहं के कारण इन्द्रजालिक ! इस झूले में झूलते हुए आखिर इस निर्णय पर पहुँचे कि मेरे मन में एक संशय है जिसे कोई नहीं जानता ! यदि ये मेरी

शंका को जानकर समाधान कर देगें तो मैं उन्हें सर्वज्ञ मान लूगा। और इनका शिष्यत्व स्वीकार कर इनके चरणों की सेवा कर जीवन कृतार्थ करुँगा।

उसी समय सर्वज्ञ प्रभु महावीर ने फरमाया– तुम्हारे मन में संदेह है कि चेतना शक्ति संपन्न जीव का अलग अस्तित्व है या पांच भूतों का समूह ही जीव है। तुम्हारे मन में जिस कारण से यह संशय उपजा है, वह उस सूत्र का ठीक–ठीक अर्थ नहीं समझने के कारण है। वास्तव में जीव स्वतंत्र अस्तित्व वाला अविनाशी तत्त्व है। वह कभी नहीं मरता ! शरीर के विनाश से चेतना का नाश नहीं होता। परमात्मा ने वेद पुराणों के प्रमाणों के आधार पर जीव के स्वतंत्र अस्तित्व को सिद्ध किया।

ज्यों–ज्यों परमात्मा की वाणी इन्द्रभूति के हृदय में उतरने लगी त्यों–त्यों उनके मन का संशय छंटने लगा। मन–मानस संदेहरहित हो गया। जब परमात्मा के सर्वज्ञत्व में कोई शंका नहीं रही, उसी क्षण उन्होंने परमात्मा का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। यह दिन था – ई.स.वी ५५७ वैशाख सुदि ११ का ! इन्द्रभूति के प्रव्रजित होने के समाचार यज्ञ मंडप में पहुँचने पर अग्निभूति आदि भी चल पड़े और परमात्मा से शंकाओं का समाधान पाकर संयमी बन गये।

सभी को दीक्षित करने के बाद उन ११ के सिर पर सौगन्धिक रत्न चूर्ण ड़ाला और गणधर पद प्रदान किया।

गौतम ने प्रश्न किया। परमात्मा ने उत्तर में तत्त्व का स्वरूप बताते हुए त्रिपदी का उच्चरण किया।

प्रश्न था– किं तत्त्वम् ?अर्थात् तत्त्व क्या है ?

उत्तर था– उप्पन्नेइ वा विगमेइ वा धुवेइ वा अर्थात् प्रत्येक पदार्थ पर्याय दृष्टि से उत्पन्न होता है और उसका नाश होता रहता है, मगर द्रव्य दृष्टि से जो कुछ है वह ध्रुव अर्थात् शाश्वत रहता है।

कुंडल की तुड़वाकर अंगूठी बनाई। इसमें अंगूठी उत्पन्न हुई, कुंडल का नाश हुआ मगर सोना तो दोनों में रहा।

इस त्रिपदी पर गहन चिन्तन करने पर स्फुरणा हुई। परमात्मा के अर्थ को पकड़ उन्हें सूत्र बद्ध किया और द्वादशांगी गणिपिटक की रचना कर डाली।

दीक्षा के पश्चात् गौतमस्वामी ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं यावज्जीवन बेले–बेले पारणा करुँगा।

परमात्मा जब एक प्रहर की देशना के बाद "देवच्छंद' में पधार जाते तब सिंहासन के पादपीठ पर बैंठकर हमेशा गौतमस्वामी एक प्रहर तक देशना देते।

वे चतुर्दश पूर्वधर थे, चार ज्ञान–मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव ज्ञान के स्वामी थे।

परमात्मा के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी। संयम पालन में वे अति कठोर थे। मुमुक्षु आत्माओं के प्रति वे अत्यन्त कोमल थे। उनके हृदय में जब भी शंका उभरती, वह चाहे छोटी हो या बड़ी, तुरन्त परमात्मा के पास जाकर समाधान करते।

ऐसा नहीं कि उन्हें कुछ ज्ञात नहीं था। परन्तु इन प्रश्नोत्तरों के पीछे परमात्मा के समाधान को जगत के हर जीव तक पहुँचाना ही एक मात्र लक्ष्य था।

इन प्रश्नोत्तरों का विशाल संकलन भगवती सूत्र में उपलब्ध होता है। गौतम ज्ञानी होने पर भी अभिमानी नहीं थे। उपासकदशा में गौतम स्वामी से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण घटना का वृत्तांत उपलब्ध होता है।

वे एक बार भिक्षा लेने के लिये वाणिज्यग्राम में गवेषणा करते–करते गाथापति आनंद श्रावक के घर पहुँचे। आनंद श्रावक भगवान महावीर का परम अनुयायी प्रथम श्रावक था।

द्वादश व्रतधारी था। ग्यारह प्रतिमाऐं उसने वहन की थी। अन्तिम समय में अनशन धारा था। आनंद ने गौतम स्वामी की वंदन किया, बाद में पूछा– प्रभो! गृहस्थ श्रावक को क्या अवधिज्ञान प्राप्त हो सकता है?

गौतम– अवश्य हो सकता है।

आनंद ने कहा– भगवन्! मुझे भी अवधिज्ञान हुआ है। मैं उत्तर को छोड़ शेष दिशाओं में ५००–५०० योजन तक लवण समुद्र का क्षेत्र, उत्तर में हिमवान पर्वत, ऊर्ध्व दिशा में सौधर्म कल्प और अधो दिशा में पहली नरक भूमि तक का क्षेत्र देखता हूँ। गौतम ने आश्चर्य चकित होकर कहा– नहीं ! अवधिज्ञान तो गृहस्थ को हो सकता है लेकिन इतना विशाल नहीं। आपका कथन असत्य से भरा है, अतः आपको प्रायश्चित्त स्वीकार करना चाहिये।

आनंद– भगवन् ! प्रायश्चित्त असत्य भाषण का आता है या सत्य भाषण का ?

गौतम– असत्य भाषण का।

आनन्द– तो फिर भगवन्! इस प्रायश्चित्त का अधिकारी मैं नहीं हूँ।

आनंद के शब्दों का तेज देखकर गौतमस्वामी असमंजस में पड़ गये। वे सीधे परमात्मा महावीर के पास आये और सारी वार्ता सुनाकर पूछा– प्रभो ! मेरी शंका का समाधान करें! प्रायश्चित्त आनंद श्रावक को करना चाहिये

या मुझे?

परमात्मा ने फरमाया– गौतम ! आनंद का कथन सत्य है। तुम जाओ और आनंद से क्षमायाचना कर प्रायश्चित्त करो। सुनकर गौतमस्वामी बिना पारणा किये ही आनंद के घर गये। क्षमायाचना कर प्रायश्चित्त किया।

यह घटना गुरूगौतम स्वामी के व्यक्तित्त्व की उज्ज्वलता को प्रकट करती है।

वे चाहते तो स्वयं अपने ज्ञान का उपयोग कर आनंद के कथन की सत्यता की जाँच कर सकते थे। पर वे ज्ञानी से पहले एक शिष्य थे, गुरू से समाधान प्राप्त करके ही शिष्यत्व का आनंद प्राप्त करने के अभिलाषी थे।

परमात्मा के इस कथन पर कि तुम्हें उनके घर जाकर क्षमायाचना करनी चाहिये, उन्होंने यह विचार नहीं किया कि मैं कोई सामान्य साधु नहीं, गणधर हूँ। एक श्रावक के घर जाकर क्षमायाचना करूँ। मगर वे अहंकार रहित थे।

उत्तराध्ययन सूत्र के २३ वें अध्ययन में पार्श्वनाथ परम्परा के आचार्य तीन ज्ञान के अधिपति केशी कुमार श्रमण से उनके वार्तालाप व प्रश्नोत्तरों का विवेचन उपलब्ध होता है। दोनों परम्पराओं में मतभेद थे। पंचमहाव्रत– चातुर्याम, सफेद वस्त्र की अनिवार्यता, रंगीन वस्त्र भी उपादेय है, प्रतिक्रमण की अनिवार्यता आदि कई बातों में स्पष्टतः अन्तर था।

यहाँ पर भी गुरू गौतम स्वामी की विनय–मर्यादा के कारण वे चलकर केशी श्रमण के निवास स्थान (तिन्दुक वन) पधारे। उनसे विस्तृत वार्तालाप किया। केशी श्रमण के प्रश्नों का समाधान करते हुए इस बात पर जोर दिया– परम्परा की अपेक्षा प्रज्ञा ही धर्मतत्त्व का निर्णायक बिन्दु है।

परिणामस्वरूप दोनों परम्पराऐं एक हो गई। पार्श्वनाथ की श्रमण परम्परा महावीर प्रभु की श्रमण परम्परा में समाहित हो गई। एक नये इतिहास की संरचना हुई।

गौतमस्वामी हृदय परिवर्तन में परम सक्षम थे। वे इतनी करूणा से ओतप्रोत थे कि संपर्क में आनेवाला व्यक्ति पंचमहाव्रतों को स्वीकार कर लेता था।

वे जिन–जिन को दीक्षा देते थे, वे केवली हो जाते थे। अतिमुक्त, स्कन्दक परिव्राजक, उदक पेढ़ाल, आदि के चरित्र क्रमशः अन्तकृद् दशांग, भगवती सूत्र, सूत्र कृतांग आदि में द्रष्टव्य है। जिन्हें गौतम स्वामी ने अपनी मधुर वाणी के द्वारा परमात्म पंथ से जोड़ा था।

भगवती सूत्र के १४ वें शतक के संश्लिष्ट नामक ७ वें उद्देशक में परमात्मा ने गौतम स्वामी के साथ अपने पूर्व संबंधों का इशारा करते हुए कहा– "तूं चिर संश्लिष्ट है, तूं मेरा चिर संस्तुत है, चिरपरिचित है, चिरसेवित है, चिरकाल से मेरा अनुगामी है, चिरानुवृति है, इससे पूर्व देवलोक में फिर मनुष्य भव में स्नेह संबंध था।"

चउपन्न महापुरुष चरियं, गुणचंद्र रचित महावीर चरियं, त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र आदि ग्रन्थों में उनके तीन भवों का वर्णन उपलब्ध होता है। १) कपिल का भव, २) सारथी का भव, ३) गौतम का भव। भगवंान महावीर के मरीचि वाले भव में कपिल उनका शिष्य बना था। कपिल गौतम का जीव था। उसने अपने गुरू मरीचि की बहुत सेवा की थी।

भगवान महावीर का अठारहवां भव त्रिपृष्ठ वासुदेव का था। उस भव में गौतम का जीव सारथी बना था।

सत्ताइसवें भव में कपिल का जीव गौतम गणधर व मरीचि का जीव प्रभु महावीर बना। स्नेह परम्परा पूर्वजन्म से ही चल रही थी। जो इस भव में आकर मुक्ति की दिशा में मुड़ गई। एक बार जब राजा गागलि, उनके माता पिता यशस्वती व पिठर को प्रतिबोध देकर दीक्षित कर उनके साथ श्रमण शाल, महाशाल गुरू गौतम स्वामी के नेतृत्व में परमात्मा के समवशरण की ओर बढ़ रहे थे, तब उन पांचों ने शुद्ध अध्यवसायों के कारण कैवल्य प्राप्त कर लिया था। जब वे परमात्मा को प्रदक्षिणा देकर केवली–पर्षदा में जाने

लगे तब गणधर गौतम ने उन्हें रोका और कहा– उधर मत जाओ। उधर केवली बिराजते हैं। आप पहले भगवान् को वंदना करो।

परमात्मा महावीर ने कहा– गौतम! ऐसा कह कर केवलियों की आशातना मत कर !

गौतम ने आश्चर्यचकित होकर क्षमायाचना की। मन में चिंतन चला। मेरे द्वारा दीक्षित प्रायः सभी मुनि केवली हो गये, मुझे अभी तक केवलज्ञान क्यों नहीं हुआ?अपना प्रश्न परमात्मा के सामने उपस्थित किया।

परमात्मा ने कहा– मेरे प्रति तुम्हारा राग ही बाधक है। हॉलाकि यह राग प्रशस्त है परन्तु यथाख्यात चारित्र में बाधक है। तूं राग छोड़, तुझे अभी केवलज्ञान हो जायेगा। सुनते ही गौतम स्वामी बिलख पडे– मुझे केवलज्ञान नहीं, आपका अनुराग चाहिये।

भगवान् महावीर की देशना द्वारा एक बार जाना कि जो श्रमण अपनी शक्ति के बल पर अष्टापद तीर्थ की यात्रा कर लेता है, वह चरम शरीरी होता है।

गौतम स्वामी ने स्वयं की परीक्षा लेने का संकल्प लिया। परमात्मा की अनुज्ञा प्राप्त कर अष्टापद की यात्रा के लिये चल पड़े। वहाँ कौडिन्य, दिन्न, शैवाल तापस अपने पांच सौ–पांच सौ शिष्यों के साथ अष्टापद की यात्रा के लिये घोर तप कर रहे थे। कौडिन्य पहली मेखला तक पहुँचा था। जब कि दिन्न और शैवाल क्रमशः दूसरी और तीसरी मेखला तक पहुँचे थे। आगे बढने में वे असमर्थ थे। घोर तपस्या के कारण उनका शरीर कृश हो गया था। वे सोच रहे थे, हमारे जैसे दुबले पतले उपर नहीं जा सके तो ये स्थूलकाय कैसे पहुचेंगे। गौतम स्वामी तो उन सभी को आश्चर्य में डाल सूर्यकिरणों का आलंबन लेकर अंतिम मेखला तक पहुँच गये। भरत महाराजा द्वारा निर्मित तीर्थ की यात्रा कर, चार, आठ, दस, दो, इस प्रकार चारों दिशाओं में बिराजमान चौबीस तीर्थंकरों की रत्नमयी प्रतिमाओं के दर्शन कर हृदय प्रफुल्लित हो गया।

नीचे उतरने पर उन तापसों को प्रतिबोध देकर दीक्षित किया। ५०१ तापसों को खीर का पारणा करते–करते, ५०१ को समवशरण के दर्शन करते, ५०१ तापसों को परमात्मा की वाणी सुनते ही केवलज्ञान प्राप्त हो गया।

यह वार्ता जानकर गौतम स्वामी ने पूछा– प्रभो ! मुझे केवलज्ञान कब होगा ?

परमात्मा ने दोहराया– तूं राग छोड़, तुझे अभी केवलज्ञान हो जायेगा। सुनते ही गौतम स्वामी बिलख पडे– मुझे केवलज्ञान नहीं, आपका प्रेम चाहिये... वरद हस्त चाहिये...! बस मेरा हृदय आपके प्रति प्रेम से सदा सदा भरा रहे!

यह घटना उनके हृदय की अजस्र भक्ति, अथाह श्रद्धा को व्यक्त करती है।

देवशर्मा को प्रतिबोध देकर जब गौतम स्वामी वापस आ रहे थे। तब देवगणों के कोलाहल को देखकर, उनके वार्तालाप को सुनकर जाना कि परमात्मा का निर्वाण हो गया।

गौतम स्वामी की भयंकर आघात लगा। विलाप और चिंतन के झूले में झूलते उन्हें उसी वक्त केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि के तीसरे प्रहर के प्रारंभ में सोलह प्रहर की अखंड देशना देते–देते भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ। और उसी रात्रि के चतुर्थ प्रहर के अन्त में अर्थात् कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के उषाकाल में गौतमस्वामी सर्वज्ञ बन गये।

दीपावली का पर्व महावीर के निर्वाण से प्रारंभ हुआ।

गुरू गौतम स्वामी १२ वर्ष तक केवली अवस्था में विचरण कर अन्त में वैभार गिरि (राजगृही) पर एक महिने का पादपोपगमन अनशन स्वीकार कर वे निर्वाण को प्राप्त हो गये।

गौतम स्वामी लब्धि के धनी थे। दीपावली के दिन आज भी चौपड़ा पूजन के समय सर्वप्रथम "श्री गौतम स्वामी तणी लब्धि होजो जी" लिखकर समृद्धि की कामना करते हैं। प्रातःकाल उनका नाम जपने से वांछित सिद्धि मिलती है। खरतरगच्छाचार्य प्रकट प्रभावी कलिकाल कल्पतरू तृतीय दादा श्री जिनकुशलसूरि के शिष्य विनयप्रभ उपाध्याय ने वि.सं. 1412 में "गौतम स्वामी के रास" की रचना की जो प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष के प्रभात में सुना–सुनाया जाता है।

प्रातःकाल उठकर गौतम गुरू का स्मरण कर व रास में निहित मंत्र "ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्री गौतम स्वामिने नमः" का जाप कर इष्ट सिद्धि प्राप्त करें।

अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार।
श्री गुरू गौतम समरिये, वांछित फल दातार।।

नूतन वीर संवत् 2543 कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा गुरू गौतम स्वामी केवलज्ञान दिवस पर विशेष आलेख-

ऐतिहासिक सत्य

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

गुरु गौतम स्वामी के रास का इतिहास

सदा काल से जैन ज्ञान भण्डार काव्यों से एवं जैन संघ कविओं से समृद्ध रहा है। हजारों पद्य-कृतियों की संस्मरणीय परम्परा में एक कृति 660 वर्षों के पश्चात् भी जन-जन में श्रद्धा, स्वाध्याय और संगान का विषय बनी हुई है।

आप अगर जानना चाहते हैं कि साहित्यिक जगत की वह दिव्य-काव्य-कृति कौनसी है तो उसका नाम है-**गुरू गौतम स्वामी का रास।**

प्रस्तुत आलेख में हम उपरोक्त यशस्वी काव्य के प्राय: अज्ञात इतिहास को प्रकाश में लाने का प्रयास करेंगे-

जिनशासन की विधि शाखाओं में से एक है-**खरतरगच्छ।** खरतरगच्छ में ही हुए चार दादा गुरूदेवों में से तृतीय दादा गुरूदेव! **'सकल मंगलवांछितदायकं'** की उक्ति को चरितार्थ करने वाले कलियुग में कल्पवृक्ष के समान श्री जिनकुशलसूरि के विद्वद्वरेण्य शिष्यों की श्रेणी में एक ख्याति-प्राप्त नाम है-श्री विनयप्रभोपाध्याय।

गुरू कृपा प्राप्त श्री विनयप्रभोपाध्याय विद्वत्ता और विनम्रता के मानो पर्याय थे। विविध गुणों से अलंकृत एवं उज्ज्वल संयम की धवल चादर से सुशोभित वे आत्म साधक एवं गुरू उपासक होने के साथ आशु कवि भी थे।

जब देराउर नगर में संवत् 1389 में दादा गुरूदेव श्री जिनकुशलसूरि स्वर्गस्थ हो गये तो वे स्वगुरू के प्रभाव को अधिकाधिक विस्तृत करते हुए तत्कालीन खरतरगच्छाधिपति श्री जिनपद्मसूरि के सानिध्य में शासन प्रभावना करने लगे।

विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी का बारहवाँ वर्ष चल रहा था।

तत्कालीन खरतरगच्छाधिपति श्री जिनलब्धिसूरि के शासन-काल में उपाध्याय श्री गुर्जर-प्रान्त की उस खंभात तीर्थ-भूमि पर चातुर्मास हेतु बिराजे जो श्री, स्वस्ति और ह्रीँ के पर्याय स्वरूप नवांगी टीकाकार खरतरगच्छालंकार श्री अभयदेवसूरि द्वारा प्रकट स्तंभन पार्श्वनाथ की करूणा, कृपा

गणधर गौतम स्वामी के रास के निर्माण का इतिहास के साथ-साथ उसके कर्त्ता के संदर्भ में फैली भ्रांतियों का निवारण करने वाला यह महत्वपूर्ण आलेख है। वास्तविकता तो यह है कि इस रास का निर्माण दादा श्री जिनकुशलसूरि के विद्वद्वर्य शिष्य उपाध्याय श्री विनयप्रभ ने किया था परन्तु वर्तमान में गच्छ व्यामोह में उलझकर अनेक विद्वान् उदयवंत अथवा विजयप्रभ नाम प्रचारित कर रहे है। इस संदर्भ में सत्य की ओर अंगुली निर्देश करने वाला यह महत्वपूर्ण आलेख अवश्यमेव पठनीय है।

और कल्याण के रस से ओत-प्रोत है।

प्रौढ़ विद्वान्, आशुप्रज्ञ, लब्ध प्रतिष्ठ एवं उत्तम संयम-पालक श्री विनयप्रभोपाध्याय के चरणों में एक दिन उनके लघुभ्राता उपस्थित हुए। निर्धनता के अभिशाप से ग्रस्त उनके जीवन में कहीं कोई सुख और सुकुन नहीं था। धनवान से अत्यन्त निर्धन बने अपने लघुभ्राता की चिन्तित स्थिति उपाध्यायश्री को अच्छी तरह अभिज्ञात थी।

जब गरीबी आती है तो चिन्ता, संताप, कलह जैसे तरह-तरह के कितने ही रोगों को साथ में लेकर आती है।

अपनत्व से भीगे अमृत-शब्दों का मुलायम संस्पर्श पाकर पीड़ा का हिम पिघल कर जैसे आँखों से रास्ते से झर-झर बहने लगा।

उपाध्यायश्री शास्त्रों के गहन विद्वान् थे पर उसमें शुष्कता नहीं, सरसता का अमृत समाया हुआ था। मानवीय संवेदनाओं से भीगे उपाध्याय प्रवर को जैसे अपने विस्मृत कर्त्तव्य का बोध-स्मरण हुआ। इसे अज्ञात शक्ति की स्फुरणा कहे या काल का प्रारब्ध अथवा सांसारिक भ्राता के पुण्य-तेजपुंज का उदय-काल! विनयप्रभोपाध्याय का मानस किसी अदृश्य तत्त्व व प्रकृति की प्रेरणा पाकर खिल उठा।

सुगंधित-शीतल बयारों से प्रफुल्लित वातावरण। शांत-प्रशांत प्रकृति। मौन मानस!

अभिनव वीर संवत् की पावन स्मृतियाँ हृदय को तरल संवदेनाओं से भर रही थी। 1881वाँ वीर संवत् चल रहा था।

आज ही परमात्मा महावीर के सर्वात्मना समर्पित श्री गुरू गौतमस्वामी को प्रभु के शाश्वत वियोग में विलाप करते हुए केवलज्ञान प्राप्त हुआ था।

कल्पसूत्र वृत्ति एवं विशेषावश्यक भाष्य का गणधरवाद श्री विनयप्रभोपाध्याय हृदय के पन्नों पर संवेदित होने लगा-ओह! जल के बिना मीन रहे तो प्रभु महावीर के बिना उनके भक्त गणधर गौतम रहे!

एक ओर गणधर गौतम स्वामी का जीवन विपुल श्रुत-ज्ञान के साथ-साथ विनय, भक्ति और समर्पण की स्निग्ध एवं सौम्य आभा से ओतप्रोत था तो दूसरी ओर उपाध्याय श्री विनयप्रभ शास्त्र-बोध से सम्पन्न होने पर भी उनके हृदयस्थ श्रद्धा की सरिता में कहीं भी अहंकार या गौरव का वर्तुल न था।

जिनशासन के उज्ज्वल पृष्ठों पर अनन्त लब्धि निधान और निस्पृह-निखालस-निर्दंभ व्यक्तित्व के धनी गणधर श्री गौतम स्वामी की जीवन-वीणा पर काव्य के मधुर सुस्वर सहजत: थिरकने लगे।

-श्रद्धा की लेखनी और हृदय की किताब!

-आस्था की आँखें और गौतम का ख्वाब!

-समर्पित मन... स्फुरित छंद.... भक्ति का आनन्द।

कवि-मानस के आँगन पर काव्य की सरस्वती नृत्य करने लगी।

वीर जिणेसर चरण कमल कमला कयवासो।
पणमवि पभणिसु सामीसाल गोयम गुरू रासो!

कलम बहती रही... हृदय भीगता रहा... संवेदनाएँ उभरती रही... कल्पनाएँ सजती रही।

सांसारिक भ्राता अपने श्रद्धेय सांसारिक भ्राता श्री विनयप्रभोपाध्याय की भाव लेखनी से श्रद्धा के पन्नों पर उतरती संवेदनाओं को आँखों से देखा ही नहीं, जी-भरकर पीया भी। काव्यकार के नयन... ओष्ठ... कर्णयुगल ही नहीं, जैसे रोम-रोम भी गौतम-रास में एकाकार हुआ जा रहा था।

* अक्षर-अक्षर जुड़कर शब्द बने...

* शब्द-शब्द मिलकर वाक्य बने...

* वाक्य-वाक्य जुड़कर श्लोक बने।

* श्लोक-श्लोक जुड़कर रास बना। और रास क्या बना जैसे स्वर्णिम इतिहास बना।

* मरू गुर्जर, अपभ्रंश... प्राकृत आदि जैसे मधुर भाषाओं का सम्मिश्रण!

* विविध छंद... अलंकार... अनुप्राश का सुन्दर संगम।

* सरस भाषा... सुबोध शैली... सरल अर्थ-बोध...।

कार्तिक सुदि एकम के मंगलमय प्रभात में जैसे-एक अनमोल काव्य का अवतरण हुआ।

सौम्य काव्य... दिव्य काव्य... भव्य काव्य की श्रेणी में प्रस्थापित होने वाला **'गुरू गौतम स्वामी का रास'** नामक सुखद-रसप्रद काव्य। चित्त को चमत्कृत... हृदय को झंकृत एवं विचारों को विस्मित करने वाले गौतम स्वामी के रास का किसी ऐसे पावन पलों में निर्माण हुआ कि ऋद्धि, सिद्धि, समृद्धि, लब्धि, विद्या, मंत्र, तंत्र, यंत्र इसमें आकर बस गये और यह रास अनन्त-अखण्ड-अक्षय गुणों का अनमोल रत्नाकर बन गया।

श्री गौतम स्वामी जैसे महाप्रभावशाली व्यक्तित्व पर निर्मित चमत्कारिक काव्य भ्राता को प्रदान करते हुए विनयप्रभोपाध्याय ने कहा-यह कृति अक्षर-शब्द से नहीं अपितु श्रद्धा और भक्ति से बनी सुकृति है। इस काव्याकृति में समर्पण की सुवास, शक्ति की उजास और हृदय की मीठास है।

निश्छल हृदय.. निर्दंभ मानस... निर्दोष भाव से इसका नित्य पारायण करना पर ध्यान रखना-श्रद्धा के गुलाबी पुष्पों के आस-पास कामनाओं के कांटे न उगे.. । भक्ति रस से सिंचित निर्मल हृदय कमल वासनाओं के पंक से मलिन न हो।

गुरू गौतम प्रभु से लब्धि-उपलब्धि नहीं, निस्पृहता का वरदान मांगना। धन और वैभव की बजाय धर्म और विरक्ति की प्रार्थना करना। अनन्त लब्धि निधान से विनय के निधान की अर्चना करना।

* दोनों समय इस सुगंधित रास को श्वास-श्वास के साथ जोड़ना... इसमें निवास करना। पारायण करो तब ध्यान रहे-विचार और वातावरण शांत हो...मन स्वस्थ और चित्त स्वच्छ हो।

* जाप-पाठ का हमेशा एक ही काल, दिशा और स्थान हो।

अहोभाव से छलकते हृदय से निर्धन भ्रात ने रास का पारायण शुरू किया।

गोयम... गोयम... नाम जैसे पापों के तमस् को हरने वाली प्रकाश-किरण!

कोलाहल मुक्त विचारों की प्रशांत गलियाँ...। अशांति न बाहर में, न भीतर में। सामायिक की साधना में गौतम-रास की आराधना होने लगी। जप के फूल में तप की सुरभि। ध्यान-आकाश में निस्पृहता की छटा। कुछ नहीं चाहिये... कोई नहीं चाहिये। अजपाजाप! प्रतिक्षण जाप! गुणों का जाप! गौतम-गौतम जाप!

वास्तव में गुरू गौतम नाम के सामने कामकुंभ, कामधेनु और चिन्तामणि रत्न है ही क्या?

श्रद्धा की भूमि पर चमत्कार सहज रूप से वैसे ही घटा, जैसे भक्तामर स्तोत्र ने लौह-श्रृंखलाओं को काटा... कल्याण मंदिर ने अवन्ति पार्श्वप्रभु को प्रकट किया... कितने-कितने नाम लें-उवसग्गहरं, जय तिहुअण, बड़ी शांति, छोटी शांति, सप्त स्मरण के प्रभाव सुविदित हैं।

नमस्कार ने चमत्कार किया... गौतम रास के

श्रद्धासिक्त नित्य स्वाध्याय से निर्धन भ्राता की किस्मत पलटी और थकान मुस्कान में बदली! बदनसीबी और गरीबी के बादल छंटे तथा सुख, सम्पत्ति और सुकुन का प्रकाश जीवन में लहराने लगा।

इसका सर्जन हुआ था जीवन निर्वाह के लिये पर निस्पृह मनोवृत्ति का सेतु बन यह काव्य अनन्तर-परम्पर भवों में अनुत्तर निर्वाण पद का हेतु बन गया।

जाप विधान -

गुरू गौतम के मंत्र का विधान करते हुए प्रस्तुत रास में श्री विनयप्रभ महाराज फरमाते हैं-

पणवक्खर पहिलो पभणीजे
माया बीज श्रवण निसुणीजे
श्रीमती शोभा संभवे ए।

प्रणवाक्षर 'ऊँ', मायाबीज 'ह्रीँ' और लक्ष्मी मंत्र 'श्रीँ' इन तीनों से गर्भित **ऊँ ह्रीँ श्रीँ श्री गुरू गौतम स्वामिने नमः** का जाप सर्वसिद्धि प्रदाता है।

एक भ्रम का निवारण -

श्री विनयप्रभोपाध्याय विद्वान् पर अप्रमत्त एवं विनीत योगी थे। उन योगी के द्वारा महायोगी गौतम महात्मा के अनन्त गुणों से परिपूर्ण गौतम रास का निर्माण।

काव्यकार श्री विनयप्रभ उपाध्याय प्रस्तुत काव्य रचना का इंगित करते हुए 45वीं गाथा में कहते हैं-**चउदह सौ बारोत्तर वरसे गोयम गणहर केवल दिवसे'** विक्रम संवत् 1412, गौतम स्वामी केवलज्ञान दिवस अर्थात् कार्तिक शुक्ला एकम को गौतम-रास का निर्माण हुआ।

पुण्य पल में इस सुरम्य रास का निर्माण हुआ तभी खरतरगच्छीय कवि द्वारा रचित इस मंगल पाठ का नूतन वीर संवत् के मंगल प्रभात में तपा-खरतर-आंचल-त्रिस्तुतिक आदि समस्त गच्छों में इसका श्रद्धापूर्वक संगान किया जाता है।

इसके रचयिता श्री विनयप्रभोपाध्याय ने अपना नाम रास में रास में गाथा संख्या 43वीं में **'विनयपह उवज्झाय थुणीजे'** स्पष्टतः अंकित किया है। पर परवर्ती संपादकों-प्रकाशकों ने भ्रम में पड़कर काल्पनिक कर्ता के रूप में विजयप्रभ (उदयवंत) का नाम न केवल प्रचलित किया अपितु **'उदयवन्त मुनि एम भणे ए'** इस काल्पनिक चरण को जैसे-तैसे जोड़ने का भी निंद्य कुप्रयास भी किया है।

मोहनलाल दलीचंद देसाई ने अपने महाग्रंथ **'जैन साहित्य का वृहद् इतिहास'** में स्पष्ट लिखा है कि गुरू गौतम स्वामी के सुप्रसिद्ध रास के कर्त्ता खरतरगच्छीय श्री जिनकुशलसूरि के शिष्य श्री विनयप्रभोपाध्याय ही हैं।

'जैन गुर्जर कवियों' के प्रथम भाग में उपरोक्त तथ्य का पुष्ट प्रमाण प्रदत्त है-अजीमगंज के श्री नेमिनाथ मंदिर में संलग्न ज्ञान भण्डार में प्राप्त प्राचीन पट्टावलियों उपरोक्त पाठ संप्राप्त है-

''तयाश्री गुरूभिः (श्री जिनकुशल सूरिभिः) विनय प्रभादि शिष्येभ्यः उपाध्याय पदं दत्तं येन विनयप्रभोपाध्यायेन निर्धनीभूतस्य निज भ्रातुः सम्पत्तिसिद्ध्यर्थं मंत्रगर्भित गौतमरासो विहितः तद्गुणनेन स्वभ्राता पुनर्धनवान् जातः'' इत्यादि।

आज विविध पुस्तकों में 'विनयपह' की जगह 'विनयपहु' पाठ मिलता है, इसे मुद्रण का दोष कहे अथवा हस्तलिखित उस प्रत के अनुसरण का दोष कहे जिसमें असावधानीवश 'विनयपहु' लिखा गया है। क्योंकि मुर्शिदाबाद के श्री संभवनाथ मंदिर से संबद्ध ज्ञान भण्डार में लगभग 200 वर्ष से अधिक प्राचीन प्रत में **'विनयपह उवज्झाय थुणीजे'** स्पष्टतया अंकित है।

निश्चित ही 'गुरू गौतम स्वामी का रास' संपूर्ण शासन की महान् धरोहर है जिसके लेखक के संदर्भ में जो भ्रांतियाँ फैली हैं, उसे संशोधित करें एवं गच्छ-व्यामोह के अंधेरे से निकलकर गणधर गुरू श्री गौतम स्वामी की अमी दृष्टि-वृष्टि का वरदान प्राप्त करें।

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

आतिशबाजी से नुकसान ही नुकसान

जब हमारे मन की दहलीज पर दीप-पर्व का आगमन होता है, तब हमारा दिल आनन्द और प्रेम की रोशनी से परिपूर्ण हो जाता है और होगा भी क्यों नहीं, इसी दिन परमात्मा महावीर ने निर्वाण का महावरदान प्राप्त किया था और नूतन वीर संवत् के मंगल प्रभात में लब्धि निधान जन-जन की श्रद्धा के आलय में विराजमान गणधर गौतम स्वामी ने केवलज्ञान की समृद्धि को प्राप्त किया था, इतना ही नहीं इसी दिन मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम, भगवती माता सीता और वासुदेव लक्ष्मण चौदह वर्ष के वनवास को सफलता, शांति और समाधिपूर्वक परिपूर्ण कर अयोध्या नगरी में पधारे थे। इसी खुशी में हृदय के आंगन पर श्रद्धा की रंगोलियाँ सजाई जाती हैं, भक्ति के दीप जलाये जाते हैं और एक-दूसरे को बधाई देते हुए आनन्द का झरना प्रवाहित किया जाता है।

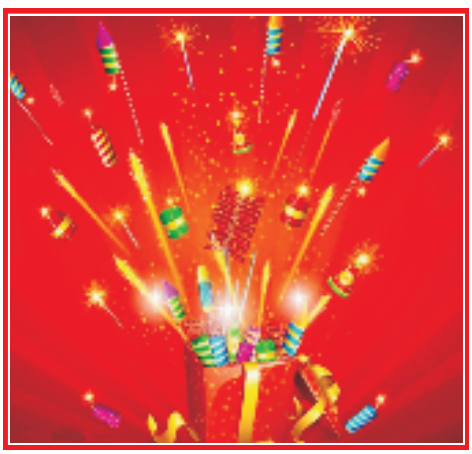

परमात्मा महावीर का निर्वाण हुआ तो एक तरह से भाव दीप बुझा और देवों ने मिट्टी के दीप प्रज्ज्वलित कर रोशनी की। कल्पसूत्र में कहा भी गया है-**'गए से दव्वुज्जोयं भावुज्जोयं करिस्सामो।'**

इसी कारण घर-घर, नगर-नगर, डगर-डगर पर लोग दीपक जलाते हैं और उसके प्रकाश में अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारण करने का एक ख्वाब देखते हैं परन्तु इसे समय की बलिहारी कहें कि पूर्वकाल में व्यक्ति जहाँ सृष्टि को उजास से भरने का प्रयास करता था, वही आज नितान्त स्वार्थी बनकर बाहर के ताम-झाम, आडंबर और भरपूर नुकसान से परिपूर्ण आतिशबाजी के द्वारा स्वयं के जीवन को ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण सृष्टि को विनाश के कगार पर पहुँचा रहा है। आइये, हम देखे कि ये आतिशबाजी किस-किस क्षेत्र में कितनी-कितनी खतरनाक, विनाशक और दु:खदायक है।

(i) शारीरिक नुकसान -

व्यक्ति जितना विश्व से प्रेम करता है, उससे ज्यादा अपने देश से। जितना देश से अनुराग करता है, उसकी अपेक्षा अपने राज्य से। जितना अपने राज्य से, उससे ज्यादा अपने गाँव से। जितना अपने गाँव से, उससे ज्यादा अपनी गली से और जितना अपनी गली से, उससे ज्यादा खुद के घर से। जितना खुद के घर से, उससे ज्यादा खुद से और खुद से अत्यन्त प्रेम जताने वाला पढ़ा-लिखा परन्तु महामूर्ख मानव आतिशबाजी के द्वारा अपने तन-मन को ही नहीं, समूचे जीवन की हँसी-खुशी को भी आग की लपटों में झोंकने के लिये तैयार हो जाता है।

1. छोटे बालक हो या मूक जानवर, हर प्राणी को आतिशबाजी के द्वारा नुकसान होने की सम्भावना है।
2. भयंकर ध्वनि प्रदूषण के द्वारा बहरेपन की समस्या भी बढ़ती जा रही है।
3. उच्च रक्तचाप (बी.पी.) और हृदयघात (हार्ट-अटैक) के मरीजों को आतिशबाजी के द्वारा भयंकर तनाव होता है।
4. हमारे शरीर का सबसे नाजूक कोमल और कमनीय अंग

है-आँख! आतिशबाजी के द्वारा निकलने वाली ज्वाला एवं धुएँ के द्वारा इस अंग को यातना पहुँचने की पूरी शक्यता रहती है और अनेक बार ऐसे प्रसंग बनते हैं जिसके कारण जिन्दगी भर पीड़ित लोगों को खून के आँसू बहाने पड़ते हैं।

5. तीव्र प्रकाश के कारण चश्में के नम्बर बढ़ने की पूर्ण सम्भावना रहती है।
6. पटाखें में प्रयुक्त पदार्थ भयंकर हानिकारक होने से चर्मरोग हो जाता है, त्वचा भी जल जाती है।
7. आतिशबाजी के जहरीले धुएँ के कारण स्वास्थ्य यहाँ तक खतरे में पड़ जाता है कि श्वास की बीमारी के कारण रोगी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
8. सिरदर्द, माइग्रेन, अनिद्रा आदि समस्याएँ होती हैं।

(ii) मानसिक नुकसान -

आतिशबाजी के शारीरिक नुकसान के साथ-साथ मानसिक नुकसान भी सूची भी कोई छोटी नहीं है। आइये! उस पर भी दृष्टि डाले-

1. गर्भस्थ शिशु और बालक आतिशबाजी की डरावनी आवाजें सुनकर भयभीत हो जाते हैं।
2. कितने ही बालक बाल्यवस्था में ही क्षुब्ध मानसिकता वाले हो जाते हैं, वे जहाँ भी देखते है, उन्हें डर ही डर महसूस होता है। कई बार तो वे जीवनपर्यन्त इस प्रकार की जटिल स्थिति से जूझते रहते हैं।

(iii) जैविक नुकसान -

1. इस जगत में हर प्राणी को जीने का अधिकार है। परमात्मा महावीर आचारांग सूत्र, दशवैकालिक सूत्र आदि में फरमाया है-**'सव्वे जीवा पियाउया'** समस्त प्राणियों को जीवन प्रिय है। इस कारण स्वयं को जो प्रतिकूल लगे, वह आचार हमें नहीं करना चाहिए। कहा भी गया है-**'आत्मनः प्रतिकूलानि न समाचरेत्।'** आतिशबाजी के कारण कितने ही छोटे-बड़े जीव मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।
2. धुएँ और ज्वाला के कारण अनेक नभचर असमय में काल के ग्रास बन जाते हैं।

3. आतिशबाजी की डरावनी ध्वनियाँ सुनकर कबूतर, तोता, चिड़िया आदि पक्षी घबराकर अपने नींड़-घौसले को छोड़कर उड़ने लगते हैं और यकायक होने वाली इस क्रिया के कारण उनके अण्डे इत्यादि नीचे गिरकर के फूट जाते हैं और उन बच्चों को निशाचर प्राणी अपने मुख का ग्रास बना देते हैं।
4. इसी आतिशबाजी के कारण कितने ही प्राणी, पशु-पक्षी असमय में बीमार हो जाते है। अनेक प्रकार के रोगों से उनकी काया छलनी-छलनी हो जाती है।

(iv) प्राकृतिक नुकसान -

आतिशबाजी हर तरह से नुकसानकारी है। जिस सृष्टि पर हम रहते हैं, जिस सृष्टि से शुद्ध जल, स्वच्छ वायु और जीवन-प्रकाश प्राप्त होता है, उसी सृष्टि के साथ अमानवीयता, मूर्खता और आतंक भरा व्यवहार करते हुए शिक्षित व्यक्ति भी लज्जित और शर्मिन्दा नहीं होते।

1. विषैले धुएँ के कारण वायु जहरीली बन जाती है जिसके कारण प्राणी जगत को स्वच्छ वायु प्राप्त नहीं हो पाती।
2. पटाखों से जो प्रकाश उत्पन्न होता है, उसके कारण पेड़-पौधे मुरझा जाते हैं।
3. पटाखों के कारण चारों तरफ कूड़े-करकट का साम्राज्य छाया नजर आता है, परिणामस्वरूप स्वच्छ भारत का सपना, सपने में भी साकार नहीं हो सकेगा।
4. बारूद, कुड़े-कड़कट आदि से नदी, नाले, तालाब, कुआँ, बावड़ी आदि का जल मैला, गंदा और प्रदूषित हो जाने से प्राणी जगत के सम्मुख पेयजल की समस्या उत्पन्न होती है।

5. आतिशबाजी से उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण की समस्या भी सर्वविदित है।
6. पटाखों के कारण ऑक्सीजन का शोषण होता है जिसके कारण श्वास (दमा) रोगी अत्यन्त त्रास को प्राप्त करते हैं।
7. यदा-कदा वन-उपवन भी जलकर भस्म हो जाते हैं।
8. हमारे जीवन को सुरक्षित रखने हेतु जो ओजोन की परत है, वह पटाखों से निकलने वाले रासायनिक तत्वों के कारण छिन्न-भिन्न होने लगी है, परिणामतः ग्लोबल वार्मिंग की समस्या महान् रूप धारण करती जा रही है। यदि रहते न जागे तो एक समय ऐसा आयेगा जब इस सृष्टि पर जीवों का जीवन-यापन आसान नहीं होगा।

(v) आर्थिक नुकसान -

आज जब सारा विश्व मंदी के दौर से गुजर रहा है, गरीबों को दो समय की रोटी नसीब नहीं हो रही है, ऐसे समय में हजारों करोड़ की राशि को आतिशबाजी की आग में झोंक देना नासमझी का सबसे बड़ा उदाहरण है।

1. प्राणलेवा पटाखों पर एक तरफ अमीर वर्ग महाराशि का व्यय करता है, दूसरी तरफ गरीब और आर्थिक तौर पर कमजोर समाज की मदद के नाम पर शून्य होता है अतः इसे आर्य, मानवीय एवं भारतीय संस्कृति का क्रूर मजाक कहा जा सकता है।
2. करोड़ों के धन का जो अपव्यय अल्पकालिक एवं खुशी के झूठे साधनों पर किया जा रहा है, उसी का उपयोग परोपकार, दान, दया, गोरक्षण एवं मानव जाति के संरक्षण में किया जा सकता है।
3. रॉकेट इत्यादि जलते हुए कभी गरीबों की झोपड़ी पर गिर जाये तो माल के साथ-साथ जान की भी हानि उठानी पड़ती है।

(vi) सामाजिक नुकसान -

आतिशबाजी पारस्परिक सम्बन्धों पर भी बुरा असर डालती है। हालांकि एक भी ऐसा तथ्य नहीं है जो पटाखों के पक्ष में अपनी सफाई दे सकें। सामाजिक नुकसान भी इसके कोई कम नहीं है। देखिये... किस प्रकार कच्चे तन्तु से भी नाजुक हमारे सम्बन्धों के फीते पर आतिशबाजी कैंची चलाने का काम करती है-

1. आतिशबाजी के कारण गली-मोहल्ले एवं पड़ौस में रहने वालों के साथ लड़ाई-झगड़े हो जाते हैं।
2. इसी तरह आने-जाने वाले पथिकों के साथ भी तनाव होने की सम्भावना रहती है।
3. ध्यानस्थ साधुजन, पढ़ते हुए विद्यार्थी एवं आवश्यक वार्तालाप करते हुए व्यक्तियों के कार्यों में खलल पहुँचती है।
4. आतिशबाजी पर अनावश्यक व्यय को देखकर गरीब वर्ग के मन में ईर्ष्या के साथ-साथ विद्रौह की भावना भी पैदा होती हैं। आर्थिक असंतुलन के परिणामस्वरूप वे चोर, डाकू, आतंकवादी बनकर राष्ट्र की ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व की शांति को भंग कर देते हैं।
5. पटाखे बनाने वाले जो बाल मजदूर होते हैं, उनकी मजबूरियों का नाजायज फायदा उठाया जाता है। कोमल अवस्था में ऐसे हानिकारक कार्य करते हुए अनेक बार वे जलकर मर भी जाते हैं। बारूद से निकलने वाली विस्फोटक पदार्थों से अल्प समय में ही उनकी जीवन का दीप बुझ जाता है या असाधारण बीमारियों से वे जीवन-भर परेशान रहते हैं।

(vii) धार्मिक नुकसान -

आतिशबाजी की अति तो क्या, अल्पता भी खराब है। इसके बेशुमार धार्मिक नुकसान भी अपनी प्रज्ञा के आधार पर देख सकते हैं-

1. प्राणी, पक्षी आदि छोटे-बड़े जीवों की हिंसा होने से परभव

में कुष्ठ, भगंदर, कैंसर आदि रोगों को सामना करना पड़ता है।

2. इसके कारण महामोहनीय कर्म का बंध होता है। परिणामस्वरूप जीव को भव-भव में **'अहिंसा परमो धर्मः'** प्राप्त नहीं होता।
3. धार्मिक-क्रिया, ध्यान-एकाग्रता, स्वाध्याय-सरसता, सूत्र-कंठस्थीकरण, प्रवचन, लेखन, तत्वचर्चा, तत्वज्ञान शिविर आदि अनेकानेक शुभ प्रवृत्तियों में विघ्न उत्पन्न होता है।
4. आतिशबाजी में प्रयुक्त होने वाले बम, एटम बम, सुतली बम, फुलझड़ियाँ, अनारदाना, रॉकेट, चकरी इत्यादि को जलाने से सरस्वती, लक्ष्मी आदि के फोटो जलकर नष्ट हो जाते हैं, इस प्रकार उनका भयंकर अपमान होता है। परिणामस्वरूप परभव में न तो लक्ष्मी मिलती है, न ही सरस्वती की कृपा प्राप्त होती है और व्यक्ति जिंदगी भर गरीबी, बदहाली, मंदबुद्धि, अंधत्व आदि का सामना करता है।

(viii) आत्मिक नुकसान -

परमात्मा महावीर का **'आत्मा तुले पयासु'** शाश्वत संदेश समस्त जीवों के सुख-दुःख को एक दृष्टि से देखने की सात्विक सोच देता है। जैसे-सुख-दुःख की अनुभूतियाँ मुझे होती हैं, वैसे ही हर प्राणी को भी होती हैं। परन्तु जब सोच पर स्वार्थ का आवरण आ जाता है तब व्यक्ति सर्वकेन्द्रित से स्व-केन्द्रित विचारों में चला जाता है और आत्मिक नुकसान कर बैठता है-

1. आतिशबाजी में आनन्दित होकर जीव अशुभ आठ कर्मों का बंधन करता है।
2. नरक आयुष्य के बंध की भी पूर्ण संभावना रहती है।
3. आतिशबाजी में क्रूर आनन्द का अनुभव होने से पाप-कर्म का संचय होता है।
4. पटाखें बनाने वाले, कच्चा माल देने वाले, क्रेता-विक्रेता आदि को पापकर्म का बंध होता है।

(viii) भौतिक नुकसान -

1. पटाखे के कारण मकान, दुकान, पेट्रोल पम्प, गोदाम आदि जलकर भस्म हो जाते हैं।
2. बड़ी-बड़ी इमारतों की नींव कमजोर होने लगती है।
3. डामर की सड़कों को भी महान् नुकसान उठाना पड़ता है।
4. कपड़े, बांस आदि से बने मण्डप, घर आदि जलकर भस्म हो जाते हैं।

आतिशबाजी से आठ कर्मों का बंधन

1. कागज को ज्ञान का उपकरण और अक्षर एवं चित्र को ज्ञान कहा गया है। इन दोनों का विनाश होने से **ज्ञानावरणीय** कर्म का बंध होता है जिसके कारण भवान्तर में अन्धा, बहरा, लूला, लंगड़ा, मंद-बुद्धि वाला बनता है जिससे शारीरिक एवं मानसिक रोगों का सामना करना पड़ता है।
2. आतिशबाजी करने से आँख, कान आदि की पदार्थ ग्रहण की जो क्षमता है, उसका नुकसान होता है,

परिणामस्वरूप **दर्शनावरणीय** आदि कर्म का बंध होता है।

3. पटाखे के कारण त्रस एवं स्थावर जीवों की हिंसा होने से **अशाता वेदनीय** कर्म का बंध होता है।
4. इस पापपूर्ण कार्य में रूचि, उल्लास और आनन्द का अनुभव करने से **मोहनीय कर्म** का बंध होता है जिसके कारण जीव मिथ्यात्व, घोर कषाय आदि के पाश में बंधकर निगोद तक में चला जाता है।
5. आतिशबाजी के कारण नरक **आयुष्य** का बंध होता है।
6. हिंसा के परिणामस्वरूप परभव में जीव कुबड़ा शरीर, कृष्ण वर्ण, विचित्र आकृति, कर्कश स्वर जैसे **अशुभ नाम कर्म** को भोगता है।
7. उपरोक्त कार्य में गर्व का अनुभव होने से **नीच गोत्र** का बंध होता है।
8. आतिशबाजी में ध्वनि आदि के कारण ज्ञान, ध्यान, साधना आदि में विघ्न उत्पन्न होने से **अन्तराय कर्म** का बंध होता है।

आतिशबाजी से बचने का संकल्प

उपरोक्त विवेचन से प्रज्ञावान यह अच्छी तरह से जान सकता है कि आतिशबाजी के ढेर सारे नुकसान हैं परन्तु फायदा एक भी नहीं पर आज समाज में आतिशबाजी को स्टेटस और स्टैण्डर्ड का पैमाना बनाया जा रहा है जिसे नितान्त रूग्ण अवधारणा कहा जा सकता है।

हम आये दिन देखते हैं कि शादी का उत्सव हो या क्रिकेट इत्यादि खेल में विजयोत्सव, लोग अपनी खुशी का इजहार आतिशबाजी के द्वारा करते हैं। ऐसा करने से मांगलिक कार्य भी अमांगलिक हो जाता है। यह मान्यता भी गलत है कि आतिशबाजी के द्वारा बालक निडर बनता है।

भारतीय संस्कृति के दर्पण में हम इतिहास की सुनहरी तस्वीरों निहारते हैं तो पाते हैं कि हमारे महापुरूषों ने मात्र मानव जाति के लिए ही नहीं अपितु पशु और पर्यावरण की रक्षा के लिये भी संदेश-उपदेश दिया है। इतना ही नहीं, इसके लिए अनेक वीर पुरूषों अपने प्राणों की आहूति भी दी है।

आइये! हम उन अच्छे, सुन्दर और प्रेम से भरे उपक्रमों को जानें जिनको करके हम सात्विक और आत्मिक प्रसन्नता को प्राप्त कर सकते हैं।

1. पटाखों में जिस राशि का व्यय किया जाता है, उससे हम स्वयं के लिए नूतन परिधान आदि उपयोगी सामग्री खरीदकर वर्षभर के लिए उपहार पा सकते हैं।
2. इस राशि का वेयावच्च, मंदिर, पुस्तक-प्रकाशन, चारित्र-उपकरण आदि सप्त क्षेत्रों में विनियोग करके पुण्यानुबन्धी पुण्य का संचय किया जा सकता है।
3. इसी राशि को वृद्धाश्रम, अनाथालय, गौशाला आदि में भेंट करके दु:खी, गरीब, असहाय जीवों की दुआ लेकर जीवन में तरक्की कर सकते हैं।
4. इस राशि के द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के शिक्षण हेतु भी सहयोग दिया जा सकता है।
5. फुटपाथ पर जीवन यापन करने वाले गरीबों में और अस्पताल में सात्विक-पदार्थ-वितरण करके सच्ची मुस्कान को पाया जा सकता है।

इस सम्पूर्ण विवेचन के उजाले में यह बिल्कुल स्पष्ट है कि आतिशबाजी से नुकसान हजारों है पर फायदा एक भी नहीं।

आतिशबाजी के प्रकाश में क्रूरता का प्रदर्शन है तो दीप-प्रज्ज्वलन में करूणा का ऐश्वर्य है। आइये! आतिशबाजी के झूठे, भ्रम भरे और मिथ्या प्रदर्शन से ऊपर उठकर हम जीवन के वास्तविक मूल्यों को आत्मसात् करें। करूणा, दया, प्रेम, मैत्री और अहिंसा जैसे महान् मूल्यों को यदि आचार-विचार में सजाया जाये तो व्यक्ति का व्यक्तित्व स्वयमेव मूल्यवान् बन जाता है।

दस महाश्रावकों
की प्रेरक-जीवन-गाथा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

सुरादेव श्रावक

ओह! यह कैसा अपूर्व संगीत मेरे रोम-रोम में प्रवाहित हो रहा है! ये मधुर गीत कहाँ से उठ रहा है?

सूरज कल भी उगा था, तपा था पर कल की और आज की तपन में यह कैसा अन्तर है! कल की तपन में आग थी, आज की तपन में मीठास है।

नया-नया क्यों लग रहा है आज का दिन...आज के पल...! आश्चर्य से भरा सुरादेव जैसे आनंद की अमी-वर्षा में नहा गया था।

अचानक नेपथ्य से आवाज आयी -

जागो...अब तो आँखें खोलो! कब तक अलसाये यूं ही पड़े रहोगे?

समझो... जीवन के रहस्य को!

देखो... आत्मा के सौंदर्य को!

जानो... आत्म-दर्शन के माधुर्य को!

जीवन विधाता आये हैं तुम्हारे नगर-आँगन में! उन्हें बधाकर अपने आत्म-आँगन में ले आओ।

जन-जन के तारक भव-ताप निवारक परमात्मा महावीर तेरे जीवन में बहार बनकर चले आये हैं।

जल्दी चल! विलम्ब न कर! कहीं हाथ में आया यह अखूट निधान फिसल न जाये।

समवसरण, जहाँ बह रही है आत्म-दर्शन की नदियाँ, जहाँ जल रहा है आत्म-अवलोकन का दिव्य-दीया!

प्रथम दीदार में ही फिदा हो गया सुरादेव!

उसका दीवानापन न तो समवसरण की अपूर्व रचना के कारण था, न देव-देवियों के नाच-गान के कारण था! उसमें केवल और केवल परमात्मा ही कारण थे। उसके नयनों में परमात्मा का निर्दोष सौन्दर्य इस तरह समा गया कि संसार के किसी पदार्थ के आकर्षण को अवकाश नहीं रहा।

भव्य सुरादेव! यह संसार और उसके भोगोपभोग अन्ततः दुखद हैं। ये सारे कामभोग मधुलिप्त तलवार को चाटने के समान है जो प्रथम क्षण में सुखदायी प्रतीत होते हैं परन्तु क्षणान्तर में दुःख का सागर ले आते हैं। अतः इनका त्याग एवं मोक्ष मार्ग का राग करके वीतराग दशा को प्राप्त करो।

प्रभो! कृतज्ञ हूँ आपके प्रति! मुझे आत्मा की प्रतीति और आपके वचनामृत में प्रीति है।

प्रभो! मेरा रोम-रोम संयम की सुवास से सुवासित एवं श्रद्धान्वित हो गया है। मैं जान गया हूँ कि 'चारित्र बिना मुक्ति नहीं।' परन्तु मेरे लिये कठिन है। कर्मों से दबे इस सुरादेव के लिये संयम इतना सहज कहाँ?मैं श्रावकत्व की साधना करना चाहता हूँ। यह कहते हुए उसकी आँखों में आस्था के चिराग जल उठे।

भव्यात्मा जान प्रभु ने सुरादेव श्रावक को बारह व्रत प्रदान कर संघ में दीक्षित किया।

यद्यपि सुरादेव छह करोड़ स्वर्णमुद्राओं एवं छह गोकुलों के स्वामी थे पर आज उनके चेहरे पर नाच रहा आनंद कुछ अनेरा और अनूठा ही था।

स्वामिन्! आपका मुख मंडल अत्यन्त पुलकित दिख रहा है; क्या कोई विशेष लाभ सिद्ध हुआ है?पत्नी धन्ना ने सीधा प्रश्न किया।

देवी! यह आनंद अर्थ-लाभ से नहीं, आत्म-लाभ के भान से उभरा है।

तुम भी यथाशक्ति-यथारूचि व्रत-प्रत्याख्यान लेकर आत्मज्ञान-भान को प्राप्त करो।

अंधश्रद्धा आत्मश्रद्धा में बदली! पूरा परिवार श्रावकत्व

के निर्मल सांचे में ढल गया। वाराणसी का यह दीपक अब श्रेष्ठी की जगह श्रावक के रूप में अधिक प्रसिद्ध था।

चौदह वर्ष द्वादश व्रताराधना के उपरान्त सुरादेव ने श्रावक-प्रतिमा की निर्मल साधना शुरू की।

यह परीक्षा किसी अग्नि परीक्षा से कम न थी पर मजबूत मनोबली सुरादेव बिना थके आगे बढ़ता गया।

'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' श्रेयस्करी साधना भला निर्विघ्न कैसे सम्पन्न हो सकती है?

रात्रि का घनघोर अंधेरा! इतने में एक राक्षसी आकृति अट्टहास करती हुई प्रकट हुई।

हे ढोंगी! ढोंग रचकर तूं दुनिया को ठग सकता है पर मुझे नहीं! छोड़ यह स्वार्थ-साधना का चोला, वरना तेरी खैर नहीं!

सुरादेव की धमनियों में बहता सत्त्व इतना कमजोर न था कि वह इन खोखली धमकियों से ढीला पड़ जाता।

विफल प्रथम प्रयास ने देव की क्रोधाग्नि को बढ़ाने में ईंधन का काम किया।

देख सुरादेव! यदि तूं अपनी धूर्तता को नहीं छोड़ेगा तो तेरे पुत्रों को इस तलवार की धार का शिकार बनना होगा! पुत्र-वध की धमकी सुनकर भी सुरादेव साधना में इस तरह स्थिर थे जैसे कुछ भी सुना ही न हो।

इतने में पौषधशाला का दृश्य बदला। पुत्र के करूण-विलाप से जैसे पौषधशाला का जर्रा-जर्रा कांप गया-पिताजी! यह दुष्ट मेरे प्राण लेने को आतुर है, तब भी आप ध्यान में मग्न है। मैं आपका सबसे प्रिय, लाडला और चहेता, क्या मुझे मरते देख आपको जरा भी पीड़ा नहीं हो रही।

वह पिता के चरणों को पकड़ कर जोर-जोर से रोने लगा-बचाओ! मुझे बचाओ।

हा...हा...हा...! कोई नहीं बचाएगा तुझे! यह तेरा पिता नहीं, हत्यारा है, हत्यारा! दो पल का समय है। यदि तुझे बचना है तो पिता को जगा! ध्यान से बाहर ला।

यह सुनकर रूदन और बढ गया- पिताजी! पिताजी! यह क्या कर रहे आप! क्या आपको मुझसे प्रेम नहीं! गिड़गिड़ा कर वह प्राणों की भीख मांगने लगा-रक्षा करो पिताजी! मेरा जीवन आपके हाथों...यह वाक्य वह पूरा भी नहीं कर पाया था कि उसे तीक्ष्ण तलवार से देव ने खड़ा का खड़ा चीर दिया! बेबस प्रकृति भी जैसे रो पड़ी पर सुरादेव पूर्णतया स्थिर और एकाग्र थे। उनके रोम-रोम में वीतरागता की धारा बह रही थी।

इतने में देखते-देखते शेष तीनों पुत्र सामने आये, रोए, चीखे, चिल्लाए और तलवार से खून की धारा छूट पड़ी परन्तु महासाधक कमलपत्रवत् निर्लिप्त और मोह-मुक्त थे।

अप्रत्याशित पराजय से असुर ने अपना पासा पलटा और डिगाने के लिये शरीर में सोलह रोग संक्रमित करने की अन्तिम धमकी दी।

रोग का नाम सुनते ही सुरादेव चलित हुए और उसे पकड़ने के लिये ज्योंहि उद्यत हुए त्योंहि देव आकाश में अदृश्य हो गया। दौड़ते हुए सुरादेव घर जाकर रूके।

पत्नी धन्ना ने कहा- नाथ! आप ध्यान-साधना से विचलित हो यहाँ कैसे आ पहुँचे?

सुरादेव ने जब पुत्र-वध तथा रोग संक्रमण की कथा सुनायी तब धर्मपत्नी होने का फर्ज निभाते हुए वह बोली- निश्चय ही देह ममत्व के शिकार बनकर आप साधना से चूक गये हैं। न आपके पुत्रों का कुछ अनिष्ट हुआ है, न आप रोगाक्रांत होने वाले हैं। कोई देव माया ही आपकी परीक्षा लेने आयी और आप पानी में बैठ गये।

सुरादेव ने कान पकड़कर अपनी भूल स्वीकार की और पश्चात्तापपूर्वक पौषधशाला में पहुँचे। बेकाबू मन-अश्व को साहस चाबुक से नियन्त्रित कर अटल उत्साह से महासाधना में जुट गये।

सफलतापूर्वक प्रतिमा साधना में आरोहण करके जीवन के अन्त में मासिक-अनशनपूर्वक सौधर्म देवलोक में सुरपद पाया। समकित की गंगा में नहाते हुए देवायु पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म पाकर संयम धर्म की सर्वोत्तम साधनापूर्वक परम निर्वाण पद को प्राप्त करेंगे।

38
श्रमण चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

ये भी चले जायेंगे...

इमस्स ता णेरइयस्स जंतुणो,
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो।
पलिओवमं झिज्झइ सागरोवमं
किमगं पुण मज्झ इमं मणोदुहं ।।15।।

मुनिवर! उत्प्रव्रजित श्रमण की कभी भी सुगति नहीं होती। तूं आर्द्रकुमार के पूर्व भव को देख। केवल मानसिक तौर पर भोगों की कामना ने उसे अनार्य देश में भेज दिया।

मात्र मानसिक भ्रष्टता भी जब यहाँ तक पतित कर सकती है तो शारीरिक भ्रष्टता के दुष्परिणाम तो पूछ ही मत! अनन्त काल बीत जायेगा, तब भी वह भ्रष्टता आत्मा को ऊँचा उठने नहीं देगी।

माना कि संयम की प्रतिकूलताएँ तुझे पीडित कर रही हैं। जो त्रास और क्लेश तेरे मन को क्लेशमय बना रहे हैं, वे सारे घाव बहते समय के प्रवाह में कब भर जायेंगे, पता भी नहीं चलेगा।

यद्यपि जीवन का कोई भरोसा नहीं है, फिर भी माना कि जिन्दगी के 40 वर्ष बाकी है। 40 वर्ष की जिन्दगी में तुझे केवल अनुकूलता, सुख और सुविधा ही मिले, यह जरूरी नहीं फिर भी मान लिया जाये कि तेरे ये 40 वर्ष सम्पूर्ण सुखमय होंगे।

यदि तूं इन 40 वर्षों की प्रतिकूलता का प्रसन्नता और समता से स्वागत करेगा तो अगले भवों में पल्योपम और सागरोपम यानि असंख्य वर्ष प्रमाण सुख मिलेगा।

यदि 40 वर्षों की दुविधा के कारण संयम का परित्याग करेगा तो चारों गतियों और चौरासी लाख जीव योनियों में जो दु:ख, शोक, ताप, आक्रन्दन, वेदना और कष्ट मिलेंगे, जन्म-जरा-मृत्यु और रोग में जो वृद्धि होगी, उन सबका हिसाब करना मुश्किल ही नहीं, असंभव है।

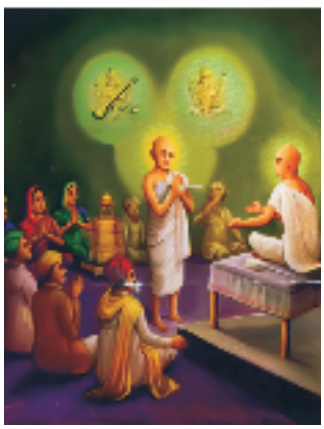

चालीस वर्ष के दु:ख -असंख्य वर्षों के सुख

चालीस वर्ष के सुख -असंख्य वर्षों के दु:ख

यह भी तो मत सोच कि ये रोग, आतंक, अस्वस्थता, दुविधा और दु:खपूर्ण स्थिति मृत्यु तक बनी रहेगी, बहुत संभव है कि उससे पहले ही पुण्योदय के प्रभाव से सारे कष्ट दूर हो जाये। दुविधा सुविधा में बदल जाये।

कदाच् तुम ऐसा सोचते हो कि ये दु:ख जीवन भर मिटने वाले नहीं है, तो भी कोई चिन्ता नहीं क्योंकि नरक में मिलने वाले पल्योपम और सागरोपम प्रमाण दु:ख के सामने इस अल्प दु:ख की क्या बात करें।

फिर तुम यह भी तो देखो कि नरक और तिर्यंच गति के दु:ख भी कितने भयंकर और कष्टप्रद। उसके सामने ये दु:ख सिंधु के सामने बिंदु और मेरू के सामने राई की भाँति नगण्य है।

तुझे ही अब सोचना है कि घाटे का काम करूं या नफे का? चालीस वर्षों के बदले असंख्य वर्षों का सुख चाहिये या दु:ख चाहिये?इसका निर्णय तुझे ही करना है।

समाचार दर्शन

दुर्ग नगर में उपधान तप प्रारंभ

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 6 एवं पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. ठाणा 5 की पावन निश्रा में ता. 19 सितम्बर 2016 आसोज वदि 3 से महामंगलकारी उपधान तप का प्रारंभ हुआ।

दुर्ग के श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ एवं संघ शास्ता चातुर्मास समिति द्वारा आयोजित इस उपधान तप में लगभग 100 आराधकों ने आराधना प्रारंभ की है। उपधान तप का दूसरा मुहूर्त्त 23 सितम्बर का है।

उपधान तप की माला का वरघोडा ता. 7 नवम्बर 2016 को होगा। तथा माला महोत्सव कार्तिक शुक्ल 8 ता. 8 नवम्बर को होगा।

पूज्यश्री के दर्शनार्थ पधारे श्री वोराजी

दुर्ग नगर में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के दर्शनार्थ बाहर से पधारने वाले संघों व श्रावकों का तांता लगा हुआ है। विशेष रूप से मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व राज्यपाल व वर्तमान में कांग्रेस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री मोतीलालजी वोरा पूज्यश्री के दर्शनार्थ पधारे। उनके साथ उनके सुपुत्र विधायक श्री अरूणजी वोरा उपस्थित थे।

श्री वोराजी ने पूज्यश्री से वर्तमान स्थितियों पर वार्तालाप किया। पूज्यश्री ने वासक्षेप डालकर आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री संघ, संघशास्ता चातुर्मास समिति, दुर्ग द्वारा श्री वोराजी का अभिनंदन बहुमान किया गया। उन्हें पूज्यश्री का साहित्य भेंट किया गया। स्थानीय सांसद श्री ताम्रध्वजजी साहू, स्थानीय विधायक श्री अरूणजी वोरा का पूज्यश्री के इस चातुर्मास को सफल बनाने में बहुत योगदान रहा है।

प्रेषक कांतिलाल बोथरा
उपसंयोजक, संघशास्ता चातुर्मास समिति, दुर्ग

महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म. का द्विशताब्दी महोत्सव

पूज्य आचार्यश्री ने सकल श्री संघ से पूज्य महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म.सा. के द्विशताब्दी महोत्सव मनाने का आह्वान किया। पूज्यश्री ने कहा– श्री क्षमाकल्याणजी म. का खरतरगच्छ पर अनहद उपकार है। उन्होंने क्रान्तिकारी कदम उठाते हुए शिथिलाचार का त्याग कर क्रियोद्धार किया था। उन्होंने विशिष्ट साधना द्वारा वासचूर्ण को अभिमंत्रित किया था। तब से हमारे समुदाय में परम्परा से वही वासचूर्ण समुदाय में चलता है। परम्परा से साधु भगवंत पूज्यश्री द्वारा अभिमंत्रित वासचूर्ण में और वासचूर्ण मिलाकर उपयोग में लेते हैं। जब भी दीक्षा आदि कोई भी समारोह होता है, तब पट्ट परम्परा के वांचन में पूज्य क्षमाकल्याणजी म. का वासक्षेप ऐसा घोष किया जाता है।

अंगारशा के उपद्रव के कारण बंद हुई श्री सिद्धाचल महातीर्थ की यात्रा को उन्होंने अपनी साधना से प्रारंभ किया था। तब से हर संघ के आगमन पर संघपति द्वारा अंगारशा पीर को चादर चढाने की परम्परा चली।

उनका स्वर्गवास वि. सं. 1873 पौष वदि 14 को बीकानेर नगर में हुआ था। संवत् 2073 आगामी पौष वदि 14 ता. 28 दिसम्बर 2016 को पूज्यश्री के स्वर्गवास को दो सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। सकल श्री संघ का कर्त्तव्य है कि ऐसे उपकारी पूज्यश्री का द्विशताब्दी महोत्सव उल्लास के साथ अपने अपने क्षेत्र में आयोजित करे।

उदयपुर के सूरजपोल दादावाडी में चातुर्मास का ठाट

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त प्रज्ञापुरुष श्री जिनकान्तिकासागरसूरीश्वरजी मसा. के शिष्य–प्रशिष्य एवं खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिसागरजी म.सा. एवं मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में उदयपुर स्थित श्री जिनकुशलसूरि आराधना भवन, श्री जिनदत्तसूरि दादावाड़ी में चातुर्मास महोत्सव का जबरदस्त ठाट लगा है।

इसी क्रम में दिनांक 29–8–2016 से 5 सितम्बर तक पर्युषण पर्व की आराधना उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई जिसमें कल्पसूत्र घर ले जाना एवं बोहराने का लाभ श्रीमती कमलाबेन – दलपतसिंहजी, गोरधनसिंहजी दोशी परिवार द्वारा लिया गया।

बारासौ सूत्र बोहराना एवं दर्शन कराने का लाभ श्रीमती रोशनदेवी भोपालसिंहजी दलाल परिवार ने लिया। श्री भगवान महावीर जन्मोत्सव पर पारणा घर ले जाना एवं रात्रि को भक्ति भावना का लाभ श्रीमती रम्भाबेन पुत्र राजकुमारजी शैलेन्द्रजी विपिनजी लोढा परिवार ने लिया । जन्मोत्सव पश्चात गोला–मिश्री की प्रभावना एवं साधर्मिक वात्सल्य का आयोजन रखा गया।

पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में अठाई–तेला आदि विविध तपस्याओं में, नेमीनाथ भगवान का जन्म कल्याणक महोत्सव, खरतरदिवस पर सामुहिक प्रवचन में आराधकों ने उल्लास पूर्वक भाग लिया। दिनांक 14.9.2016 से 18.9.2016 तक जिनेन्द्र भक्ति पंचाह्निका महोत्सव प्रारंभ हुआ जिसमें श्री गुरु गौतमस्वामी पूजन का लाभ श्रीमती सरोजबेन – भगवतसिंहजी सुराणा परिवार ने, पद्मावती देवी पूजन का लाभ श्रीमती सुशीला बेन – किरणमलजी सावनसुखा परिवार ने, दादागुरूदेव पूजन श्रीमती सुशीला बेन – गजेन्द्रजी भंसाली परिवार ने, मन्दिरजी में सभी प्रतिमाओं, दादागुरूदेव, सभी अधिष्ठायक देवी देवताओ के अठारह अभिषेक का लाभ श्री जैन श्वेताम्बर वासुपूज्य महाराज का मन्दिर ट्रस्ट उदयपुर ने लिया एवं अंतिम दिन सरस्वती पूजन का लाभ श्रीमती निर्मला बेन – रोशनलालजी कोठारी परिवार ने लिया। जिसमें 51 बालक बालिकाओं पूजन का लाभ लिया। विधिविधान कराने श्री संजयभाई ककरेचा, मनासा वाले एवं संगीतकार श्री विनीत जैन द्वारा पंचाह्निका महोत्सव में पूजन कराया गया।

प्रेषक– प्रताप चेलावत, उदयपुर

दुर्ग में स्वाध्याय का रसपान

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिश्री मनितप्रभसागर के द्वारा लगातार स्वाध्याय तथा तत्वज्ञान की कक्षा ली जा रही है। सुबह की कक्षा में प्रशमरति की विवेचना के बाद जैन जीवनशैली का विवेचन चल रहा है। प्रवचन के उपरान्त की क्लास में पहले द्वितीय कर्मग्रंथ का रसप्रद विवेचन परिपूर्ण हुआ। तदुपरान्त प्रत्याख्यान भाष्य का सरल एवं सरस शैली में विवेचन चला। उसके बाद अभी तीसरा ग्रंथ श्रावकाचार एवं दण्डक प्रकरण का विवेचन गतिमान है। अच्छी संख्या में तत्वार्थ जिज्ञासु इन कक्षाओं में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे है।

स्वाध्यायी प्रकोष्ठ की घोषणा

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने केयुप के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन में केयुप के अन्तर्गत स्वाध्यायी प्रकोष्ठ बनाने की घोषणा की। इचलकरंजी निवासी स्वाध्यायी श्री रमेश लूंकड को इस प्रकोष्ठ का संयोजक नियुक्त किया। उन्होंने फरमाया– आगामी एक वर्ष में 100 स्वाध्यायी तैयार करने हैं। इस हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जायेगा। पूज्यश्री ने कहा– इसमें महिलाओं को भी सम्मिलित किया जायेगा। पूज्यश्री की घोषणा का सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। कई युवाओं ने इस प्रकोष्ठ में सम्मिलित होकर स्वाध्यायी बनने हेतु अपने आपको प्रस्तुत किया।

केयुप शहादा का पुनर्गठन

खरतरगच्छ युवा परिषद् से जुड़े बन्धुओं की बैठक रविवार 18 सितम्बर 2016 को हुयी।

बैठक में आगामी कार्यकाल के लिये अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्, शाखा का गठन हेतु कार्यसमिति का मनोनयन आगामी तीन वर्षो के लिये किया गया। कार्यसमिति सदस्यों ने सर्वसम्मति से निम्न प्रकार दायित्व निर्धारित किये।

अध्यक्ष: प्रविण मिश्रीलालजी लुनिया

उपाध्यक्ष: धर्मेन्द्र विजयलालजी चौपडा

मंत्री: जितेश सुभाषचंदजी छाजेड़

सहमंत्री: यश कचरूलालजी नाहटा

कोषाध्यक्ष: पवन कांतीलालजी नाहटा

सहकोषाध्यक्ष: खुशाल राणुलालजी गुलेच्छा

1. हर्षल पारसमलजी नाहटा, 2. सचिन अशोकचन्दजी नाहटा, 3. पंकज जसराजजी चौपड़ा, 4. अर्पण रमेशचन्दजी खिंसरा, 5. मनोज मदनलालजी कोचर, 6. कुणाल विजयकुमारजी नाहटा, 7. सचिन कातीलालजी भसाली, 8 संदीप कांतीलालजी नाहटा, दुर्गा में पूज्य गच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागर सूरिश्वर जी निश्रा में पूज्य आयोजित होने वाले प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन में सभी के चलने के संकल्प के साथ बैठक हुई।

सूरिमंत्र की प्रथम पीठिका का प्रारंभ

पू.खरतरगच्छाधिपति आचार्यश्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. दि. 03 अक्टूबर 2016 से सूरिमंत्र की प्रथम पीठिका की साधना का शुभारम्भ किया है। इस साधना में पूज्य श्री तप-साधना के साथ मौनपूर्वक सूरिमंत्र की साधना करेंगे। दि. 23 अक्टूबर को इस साधना की पूर्णता होगी। हम परमात्मा से कामना करते है कि उनकी साधना निर्विघ्न और उल्लासपूर्वक सम्पन्न हो।

केयुप अधिवेशन की घोषणाऐं

- स्वाध्यायी प्रकोष्ठ बनाया जाना।
- महिला परिषद् बनाना।
- हर वर्ष मानव सेवा का कार्य करना।
- प्रति सप्ताह सामूहिक स्नात्र पूजा का आयोजन करना।
- हर महिने सामूहिक सामायिक का आयोजन करना।
- दादा जिनचन्द्रसूरि की पुण्यतिथि का आयोजन करना।
- जिनमंदिरों का स्वच्छता अभियान आयोजित करना।
- सिद्धाचलजी की सेवा के कार्य में पूर्ण योगदान देना।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन का सफल आयोजन

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् का सर्वप्रथम दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन दि. 24 एवं 25 सितम्बर 2016 को छतीसगढ़ की धर्मनगरी दुर्ग में आयोजित हुआ। परम पूज्य गुरूदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में एव पू. माताजी म. श्री रतनमाला श्रीजी म.सा. बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युतप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा पावन सानिध्यता में श्री जैन श्वे, मूर्तिपूजक संघ दुर्ग एवं संघशास्ता चातुर्मास समिति 2016 के तत्त्वावधान एवं खरतरगच्छ युवा परिषद्-दुर्ग शाखा के संयोजन में आयोजित इस भव्य अधिवेशन में केयुप की देश भर मैं फैली 70 से अधिक शाखाओं के सैंकडों युवा सदस्यों ने हिस्सा लिया।

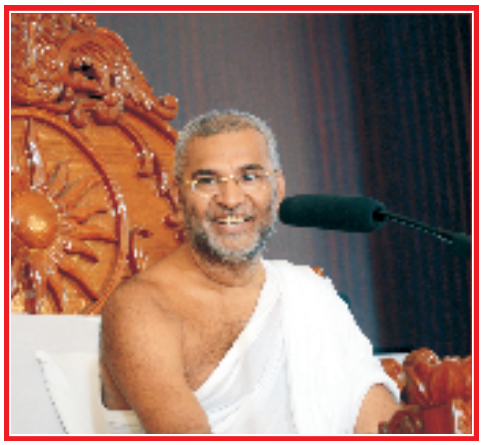

आयोजन की शुरूआत गच्छाधिपति आचार्यश्रीजी के मंगलाचरण के साथ हुई। अधिवेशन का उद्घाटन राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा ध्वजारोहण एवं उपस्थित विशिष्ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं केयुप गीतिका के साथ शुरू हुआ। अधिवेशन के प्रथम सत्र में दुर्ग शाखा के अध्यक्ष एवं अधिवेशन के चेयरमैन पदम बरडिया ने उपस्थित अतिथिओं एवं सभी शाखाओं के सदस्यों का स्वागत किया। रायपुर शाखा के सदस्यों ने अपने मधुर कंठ से स्वागत गीत प्रस्तुत कर समा बांध दिया। कार्यक्रम में विशेषण से उपस्थित श्री अखिल भारतीय श्वे. जैन खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के संरक्षक श्री मोहनचंदजी ढढ्ढा एवं अध्यक्ष श्री मोतीलालजी झाबक ने अधिवेशन की शुभकामनाएं देते हुए अपने उद्बोधन में युवा परिषद् की अनिवार्यता समझाते हुए कहा कि प्रतिनिधि महासभा खरतरगच्छ पेढ़ी एवं युवा परिषद् को कंधे से कंधा मिलाकर गच्छ की प्रगति के लिए कार्य करने हैं।

श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी महामंत्री, प्रतिनिधि सभा के सहमंत्री गच्छ समर्पित श्री पदमजी टांटिया ने भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर खरतरगच्छ के स्वर्णिम भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्य को टेक्नोलॉजी के साथ सुंदर समन्वय कर गच्छ की सम्पूर्ण जानकारी से परिपूर्ण विशेष मोबाईल एप्लीकेशन ''खरतर'' की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए एप को विधिवत लाँच किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष रतन बोथरा ने युवा परिषद् के गठन की आवश्यकता पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि युवा परिषद् पूज्य गुरूदेव का स्वप्न है और हमें इस स्वप्न को मजबूती देकर साकार करना है। वरिष्ठ उपाध्यक्ष कुशल गुलेच्छा ने परिषद् के प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय कार्यकारिणी से कोषाध्यक्ष सुरेश लूणिया एवं प्रचार प्रसार संयोजक धनपत कांनुगो ने भी युवाओं को संबोधित करते हुए अपने विचार एवं सुझाव रखे। मंच का सफल संचालन दुर्ग शाखा के संतोष बडेर ने किया।

युवामनीषी पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. ने उपाध्याय श्री वल्लभ द्वारा उल्लेखित 'खरतर' शब्द के नौ अर्थो का सारगर्भित वर्णन करते हुए युवाओं को जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने के लिए GROUP (संगठन), GENIUS (चतुर, तेज), GENTLE (सज्जन, सरल), और GOAL (लक्ष्य), 4-G का मूल मंत्र दिया। परम पूज्या साध्वीजी डॉ. विद्युतप्रभाश्रीजी म.सा. ने युवाओं को संबोधित करते हुए खरतरगच्छ की उज्ज्वल एवं गौरवशाली परम्पराओं का उल्लेख किया। उपस्थिति समस्त युवाओं से अपने गच्छ की क्रियाओं से जुड़ने एवं जोड़ने का आह्वान किया।

अधिवेशन में युवा शक्ति को संबोधित करने

अहमदाबाद से विशिष्ट रूप से पधारे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सुप्रसिद्ध वक्ता डॉ. महावीर जी गोलेच्छा ने 'क्रोध पर कैसे विजय पाएं?' एवं 'जीवन में सफल कैसे हो?' जैसे ज्वलंत विषयों पर अपने विचार रखे, उनका उद्‌बोधन निश्चित ही प्रत्येक युवा के लिए एक टर्निंग पॉइट साबित होगा। सत्र के अंत में पूज्य गुरूदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने देशभर से आये हजारों युवाओं को संबोधित करते हुए फरमाया कि सारे युवा एकजुट होकर एक-दूसरे से सहयोग करते हुए धर्म के क्षेत्र में कम करें यही अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद का उद्‌देश्य है। किसी धर्म या सम्प्रदाय का विरोध न करते हुए अपना विकास ही खरतरगच्छ युवा परिषद का एजेन्डा है। युवा परिषद् में सदा की भाँति इस बार भी आचार्य भगवंत का उद्‌बोधन सुन सभी उनकी अमृतवाणी में सराबोर हो धन्य हो गए ... गुरूदेव ने सभी सदस्यों से आह्‌वान किया कि ज्यादा से ज्यादा खुद को खरतरगच्छ की समाचारी से जोड़ युवा वर्ग स्वाध्यायी बनें क्योंकि अपने गच्छ के विकास के लिये ये सबसे जरूरी मंत्र है।

राष्ट्रीय सहमंत्री रमेश लूंकड ने अपने भाव व्यक्त करते हुए ऐसे स्वाध्यायी तैयार करने पर जोर दिया जो प्रतिवर्ष ऐसे स्थानों पर जहाँ खरतरगच्छ का चातुर्मास ना हो वहां जाकर पर्युषण आदि क्रियाएं करा सके जिससे गच्छ के अनुयायी गच्छ की क्रियाओं से वंचित ना हो, इस पर गुरूदेव ने तत्काल युवा परिषद् के अंतर्गत ऐसे प्रकोष्ठ के निर्माण के निर्देश दिए जहाँ ऐसे स्वाध्यायी तैयार किये जा सकें एवं इस प्रकोष्ठ का प्रभार रमेश लूंकड को दिया गया।

केयुप के राष्ट्रीय सलाहकार पदमजी टांटिया ने अगले वर्ष से शाखाओं को पुरस्कृत करने के लिए निश्चित मापदंड (Point System) की सविस्तार जानकारी दी। राष्ट्रिय अध्यक्ष रतन बोथरा ने भविष्य की योजनाओं से सभी को अवगत कराया अधिवेशन की फलश्रुति के रूप में लिए गए निर्णयों की सविस्तार जानकारी राष्ट्रीय महामंत्री प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल ने दी।

अधिवेशन में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय इस प्रकार है:

वर्ष में एक वांचना शिविर एवं एक स्वाध्यायी शिविर का आयोजन (गुरूदेव की निश्रा में)

प्रति वर्ष असोज वदि 2 को चतुर्थ दादागुरूदेव की पुण्यतिथि पर भव्य मेले का आयोजन

प्रति वर्ष श्रावण शुक्ल 6 को खरतरगच्छ दिवस मनाना

गच्छाधिपति आचार्यश्रीजी के दीक्षा दिवस (आषाढ़ वदि 6) के उपलक्ष्य में चिकित्सा शिविर एवं मानव सेवा के विभिन्न उपक्रम आयोजित करना

दि. 8 जनवरी 2017 को अपने क्षेत्र के जिनालय, दादावाडी उपाश्रय आदि का शुद्धिकरण करना

राष्ट्रीय महामंत्री प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल ने दुर्ग शाखा द्वारा इस अधिवेशन हेतु अल्प समय में की गयी सुंदर व्यवस्था की भूरि भूरि प्रशंसा की। साथ ही सभी शाखाओं के सदस्यों का आभार प्रकट किया।

केन्द्रीय समिति द्‌वारा इस राष्ट्रीय अधिवेशन के सफल आयोजन हेतु श्री जैन श्वे, मुर्तिपूजक संघ दुर्ग, संघशास्ता चातुर्मास समिति 2016 एवं अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्-दुर्ग शाखा के पदाधिकारियों का बहुमान किया गया। सत्रांत में दुर्ग शाखा द्वारा अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की केन्द्रीय समिति के सदस्यों एवं केयुप की सभी शाखाओं का बहुमान किया एवं आभार प्रकट किया।

सदस्यों की संख्या कम हो चलेगा किन्तु सदस्यों में गच्छ के प्रति समर्पण और अनुशान जरूरी है, सदस्यों की वाणी, आचरण और कार्यशैली में खरा रहना ही खरतरगच्छ की पहचान है।

आचार्य श्री ने युवाओं को सफलता के लिए डिसीप्लीन (अनुशासन), डायरेक्शन (निर्देशन), सही उद्देश्य और लक्ष्य पाने के लिए क्रियाशीलता तथा डेयर (साहस) का थी डी सूत्र दिया,

केयुप की दो नई शाखाओं नीमच और अहिवारा की शपथ विधि पूज्य आचार्य श्री जी द्वारा अधिवेशन में सम्पन करवाई गई

अधिवेशन का दूसरा एवं तीसरा सत्र पूर्ण रूप से युवाओं के नाम रहा जहाँ केयुप की विभिन्न शाखाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से अपने विचार रखे वक्ताओं द्वारा कई सुझाव दिए गए जिन्हें राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने गंभीरता पूर्वक विचार कर उन पर अमल करने का आश्वासन दिया पूरे भारत से अलग अलग शाखाओं से पधारे हजार से ज्यादा प्रतिनिधियों ने अधिवेशन को अपनी सफलता के चरम पर पहुँचा दिया। केयुप की वर्षभर के कार्यो की समीक्षा कर उन कार्यो को आगे और सुनियोजित रूप से आयोजित करने का संकल्प सभी शाखाओं के सदस्यों ने लिया एक ऐसा खुशनुमा पारिवारिक माहौल तैयार हुआ जिसमें सभी ने अपने विचारों का आदान प्रदान किया। इस सत्र का व्यवस्थित संचालन सहमंत्री रमेश लूंकड ने किया।

सत्र के अंत में रात्रि में छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध कलाकार हेमंत झाबक एवं साथियों द्वारा भक्ति भावना का रंगारंग कार्यक्रम जमाया।

अधिवेशन के दूसरे दिन प्रात: सभी युवाओं द्वारा प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जिसमें सभी का अनुशासन देखते ही बनता था। बैंड की धुन एवं गुरूदेव की जयकारे से दुर्ग शहर गूंज उठा।

द्वितीय दिन के प्रथम सत्र का आरम्भ गुरूदेव के मुखारविंद से मंगलाचरण के साथ हुआ। धर्म सभा को संबोति करते हुए पूज्य आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीजी म.सा. ने युवाओं को कहा कि खरतरगच्छ युवा परिषद से जुड़े हर सदस्य को जीवन के लिए और धर्म पालन के लिये संकल्प लेना चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि जीवन में हृदय की शुद्धता के साथ श्रद्धा और दूसरों के प्रति अच्छे विचारों को ग्रहण करें और उनको कार्य रूप में परिवर्तित भी करें। शिक्षा के क्षेत्र में, मानवसेना के क्षेत्र में सभी युवा सदस्य सक्रियता से जुड़े और समाजसेवी कार्यो को मूर्तरूप देकर दूसरों को प्रेरणा दें।

आचार्यश्री ने युवा समुदाय को धर्म क्षेत्र में प्राचीन मंदिरों, दादावाडियों और उपाश्रयगृहों के जीर्णोद्धार एवं रख रखाव के साथ-साथ नए मंदिरों और उपाश्रय गृहों की स्थापना एवं निर्माण के लिए भी तत्परता से सहयोग देने व जुडने को कहा।

सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से कुछ नियमों का पालन करने का सकल्प लेने के लिए प्रेरित करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि सभी युव सदस्य जिन मंदिर व गुरूवंदन की विधि पूरी श्रद्धा के साथ करें।

आचार्यश्री ने युवाओं को रात्रि के समय भोजन न करने का सकल्प लेने के साथ तथा सामूहिक रात्रि-भोज जैसे आयोजनों में शामिल न होने का भी निर्देश दिया। पुज्यश्रीजी ने आह्वान पर केयुप के देश भर से पधारे सेंकडों सदस्यो ने एक वर्ष के लिए किसी भी समारोह (शादी, रिसेप्सन, गृह प्रवेश आदि) में रात्रि भोजन न करने का संकल्प किया।

दुर्ग में आयोजित इस अ.भा.ख.यु. परिषद के प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन में युवाओं के उल्लास और उत्साह पर आचार्यश्रीने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सम्मेलन आयोजन करने वाली चातुर्मास आयोजन समिति और युवा परिषद् दुर्ग इकाई के कार्यो की अनुमोदना की। आचार्यश्री ने सभी युवाओं को सामायिक, प्रतिक्रमण, साधना आदि सीखने एवं सिखाने के लिए संकल्पित होने का निर्देश भी दिया।

प्रेषक

धनपत कानुंगो (राष्ट्रीय संयोजक-प्रचार प्रसार)

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्

मुनिश्री मैत्रीप्रभसागरजी द्धारा 56 उपवास की तपश्चर्या

पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्रीमद् जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य तपस्वी मुनिराज श्री मैत्रीप्रभसागरजी के द्वारा 56 उपवास की सुदीर्घ तपश्चर्या शाता, समाधि और आनन्दपूर्वक सम्पन्न हुआ। अभी उनका चातुर्मास ऋषिकेश में साधना-आराधना के लक्ष्य से चल रहा है इस चातुर्मास से पूर्व भी वे अपने जीवन में मासक्षमण, वर्षीतप आदि की आराधनाएं लगातार करते ही रहते है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि मुनिश्री ने अपने जीवन में जीवदया हेतु अनेक बार अनशन किए है और कत्लखानें को बन्द करवाकर भारत भूमि पर अहिंसा का उद्घोष किया है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से उनको हार्दिक शुभकामना अर्पित की जाती है।

इचलकरंजी में भव्य पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

गच्छ गणिनी पू. सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 7 की पावन निश्रा मं पर्युषण पर्व की आराधना बहुत भव्य रूप से हुई। प्रथम तीन दिन दोपहर में महावीर स्वामी षट्कल्याणक पूजा, पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा भाद्रपद वदि चौदस को दादागुरूदेव की पूजा हुई। दादागुरूदेव मणिधारी जिनचन्द्रसूरिजी म. की स्वर्गारोहण तिथि के निमित गुणानुवाद और सायंकाल मदनपाल महाराजा बनकर गुरूदेव की 108 दीपों से आरती का आयोजन रखा गया। मदनपाल राजा बनने का लाभ नेमीचंदजी आयोजन हुआ। भादवासुदि एकम के दिन स्वप्नावतरण भी बहुत ऐतिहासिक रूप से और बालेकओं द्वारा नृत्य हुए भव्य रूप से हुआ। रविवार को कुमारपाल महाराजा बनकर भव्यातिभव्य आरती हुई। जिसका लाभ संघवी माणकचंदजी अरूणकुमारजी ललवाणी ने लिया। उसी दिन महापूजा का आयोजन हुआ दादावाड़ी मंदिर इतना सुन्दर सजाया गया लगता ही नहीं था कि यह अपनी दादावाड़ी हैं। जिसका लाभ नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड ने लिया। भाद्रवासुदि तीज के दिन राहुलकुमार जसराजजी छाजेड़ एवं सभी पतस्वी का सामूहिक पच्चक्खाण व अभिनंदन किया गया। संवत्सरी महापर्व के पावन दिन पुरूषों में व महिलाओं में बहुत पौषध हुए छोटे छोटे बच्चें ने पहली बार पौषध के साथ उपवास किया। साध्वी प्रीतियशाश्रीजी म. ने बारसो सूत्र का वांचन किया। सामूहिक तपस्या का पारणा संघवी माणकचंदजी अरूणकुमारजी ललवाडी की ओर हुआ।

पर्युषण महापर्व में जयणाव्रत में बहुत लोगों ने लाभ लिया। करीब 100 से अधिक लोगों ने जयणाव्रत का तप किया। सौ. ललितादेवी शिवलालजी ललवाणी ने 32 उपवास किये।

खरतरगच्छीया साध्वी विनीतयशाश्रीजी का देवलोक गमन

खरतरगच्छ समुदाय परम् पूज्या प्रवर्तिनी स्व.श्री तिलकश्रीजी म.सा.की सुशिष्या प.पू.साध्वीश्री विनीतयशाश्री जी म.सा. का पूना में स्वर्गवास हो गया। आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्दसूरिजी ने देह विसर्जन की विधि करवाई। साध्वीजी के देवलोक गमन से गच्छ और समुदाय में हानि हुई है। जहाज मंदिर परिवार देवलोकगामी आत्मा को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

जोधपुर बाड़मेर जैन समाज में पर्वाधिराज पर्युषण व प.पू. महत्तरा श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की 28 वीं पुण्य तिथि सानंद सम्पन्न

परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आ.भा. श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी चम्पा-जितेन्द्र ज्योति प.पू. धवल यशस्वीश्री विमल प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा9 की क्षेमंकरी निश्रा में बाड़मेर जैन समाज जोधपुर संघ में पर्वाधिराज पयुर्षण महापर्व भक्ति भावना व तप-जप के साथ मनाए गए।

आठवां दिन- संवत्सरी महापर्व प्रातः 6 बजे काफी पुरूष व महिलाओं ने पौषधव्रत लिया। प्रतिक्रमण, पडिलेहण, स्वाध्याय फिर जिनमंदिर दर्शन करके सभी प्रवचन मंडप में पहुंचे। मूलसूत्र वहोराने के पश्चात् ज्ञान पूजा आदि हुई। साध्वी जयरत्नाश्रजी म. सा. ने कंठस्थ मूल सूत्र का वांचन किया। शुद्ध उच्चारण व स्पष्ट वाणी से डेढ़ घंटे में बारसा सूत्र का वांचन किया।

भाद्रवा सुदी 6 को प्रातः सामुहिक पारणे का लाभ देवीलालजी मीनचंदजी बोहरा ने लिया। पयुर्षण पर्व के अन्तर्गत 16 उपवास 15,13,11,9 एवं सामुहिक अट्ठाईयां, छट्ठ अठम आदि कीलपस्याएं हुई सबका पारणा एक साथ व्यवस्थित रूप से करवाया गया। 9 बजे अक्षयनिधि, समवसरण एवं सभी तपस्वीयों का भव्य वरघोड़ा निकला।

भाद्रवा सुदी 7 ता. 9.9.2016 से प.पू. महतरापद विभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की 28 वीं पुण्य तिथि निमिते त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन रखा गया। प्रथम दिन सामुहिक आयंबिल प्रवचन, जाप आदि। द्वितीय दिवस पंच परमेष्ठी के वर्णानुसार 108 एकासनें, नमस्कार महामंत्र का भाव्य जाप व अनुष्ठान प.पू. गुरूवर्या श्री की गुणानुवाद सभा जिसमें सीमा वडेरा, कंचन डुंगरवाल, उदयराजजी गांधी, प. पू. विमलप्रभाश्रीजी म.सा. प.पू. विश्वरत्ना श्रीजी म.सा. गुरूवर्या श्री के जीवन पर प्रकाश डाला। गुरूवर्या श्री के तस्वीर को दीप प्रज्ज्वलन, माल्यार्पण, वासक्षेप पूजा की बोलियां सामायिक, मौन व्रत व नवकार मंत्र की माला से हुई।

वासक्षेप पूजा श्रीमती नर्मदा देवी पत्नी सूरजमल जी बोहरा ने 3300 सामायिक, माल्यार्पण-मुमुक्ष रजत सेठिया व शुभम् सिंघवी चौहटन ... 4100 नवकार मंत्र की माला व दीप प्रज्जवलित करने का रेखा सेठिया ग्रुप ने 1300 घंटे मौन व्रत से लिया। 28 वीं पुण्य तिथि निमित्त 28 लकी ड्रॉ निकाले गये।

तृतीया दिवस 22 वें तीर्थकर नेमिनाथ परमात्मा का भव्य स्नात्रमहोत्सव बालिकाओं व महिलाओं के द्वारा नेमिनाथ का जन्म से लेकर दीक्षा तक संपूर्ण जीवन पर हृदय स्पर्शी नाटिका का आयोजन हुआ। इसका संचालन साध्वी श्री मयूरप्रिया श्रीजी म.सा. ने किया। इस कार्यक्रम की चर्चा काफी दिनों तक लोगों की जुबान पर रही।

आचार्यश्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. का देवलोक गमन

तपागच्छाधिपति आचार्यश्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. का मुम्बई में 25 सितम्बर की मध्यरात्रि लगभग 12.18 बजे कालधर्म हो गया। आचार्य भगवंत कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। पूज्य आचार्य भगवंत के देवलोक गमन के समाचार मिलते ही जैन समाज में शोक की लहर दौड़ पड़ी। पूज्य आचार्य भगवंत का दूसरे दिन अग्नि संस्कार किया गया जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उन्हें अंतिम विदाई दी। आचार्यश्री ने अपने सुदीर्घ संयम पर्याय में धर्म की आराधना से जिनशासन की महती प्रभावना की। ज्ञातव्य है कि 97 वर्ष की आयुष्य में भी स्वयं ही संयम धर्म की समस्त क्रियाओं के कर पाने की सक्षमता का श्रेय वे सदा नवकार महामंत्र और जिनशासन को देते थे। जहाज मंदिर परिवार सादर श्रद्धांजली अर्पित करता हैं।

रायपुर दादावाडी में पर्युषण महापर्व की आराधना सम्पन्न

रायपुर नगर में इस वर्ष खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्रीजिन मणिप्रभसागर सूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञा से बहन म.सा. विदूषी जैन साध्वीश्री डॉ. विद्युतप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या विदुषी जैन साध्वी श्री डॉ. श्री नीलांजना श्रीजी म.सा. आदि ठा. 6 की पावन निश्रा में पर्वाधिराज पर्यूषण महापर्व की अभूतपूर्व मंगल आराधना अत्यन्त भावोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई। आठ दिवसीय पर्वाराधना में दैनिक प्रभु पूजन, प्रवचन, सामायिक, प्रतिक्रमण, सहित स्वाध्याय आदि धार्मिक कार्यक्रमों में आराधकों ने उत्साह पूर्वक भाग लेकर अपने कर्मों की निर्जरा। की। विदुषी साध्वीजी डॉ. नीलांजना श्री जी के धारा प्रवाह प्रवचनों ने अनूठा समां बांध दिया। श्रद्धालुजनों की अपार भीड़ से सम्पूर्ण प्रवचन पंडाल खचाखच भरा हुआ रहता था साध्वी जी श्री की आकर्षक प्रवचन शैली का श्रवण करने हेतु श्रद्धालुजन समयपूर्व ही प्रवचन हाल में प्रवेश कर अपना स्थान सुरक्षित कर लेते थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अपार जन मेदनी एक दूसरे से आगे रहने की होड़ में उमड़ पड़ी हो।

दिनांक 29 अगस्त 2016 को पर्वाधिराज पर्यूषण महापर्व का शुभारम्भ होते ही पर्वआराधकों का समूह सर्वत्र दृष्टव्य हो रहा था। आराधक अपनी अपनी धार्मिक क्रियाओं में व्यस्त नजर आ रहे थे। जिनालय, दादावाड़ी मां मद्मावती मंदिर आदि में नजारा ही अलग था। सम्पूर्ण दादावाड़ी प्रांगण भी छोटा लगने लगा। दिनांक 2 सितम्बर 2016 को भगवान महावीर स्वामी जन्म वांचन के अवसर पर श्रद्धालुजनों का सैलाब अपने चरम पर था। महास्वप्नों ने चढ़ावे की बोलियां ली उन्होंने स्वयं को धन्य तो किया ही साथ ही सभी का उत्साह वर्धन भी किया। प्रभु व्यक्ति की अद्भुत मिशाल प्रस्तुत करने की भावना भाते हुए पालनाजी आदि चौदह महास्वप्नों को मस्तक पर धारण कर श्रद्धालुओं ने अपने भाग्य को सराहा।

दिनांक 7 सितम्बर 2016 को प्रात: सदर बाजार स्थित श्री ऋषभदेव जैन श्वे. मंदिर से भव्य वरघोड़ा निकाला गया जिसमें रथ पर परमात्मा की प्रतिमाजी को जयघोष सहित विराजित किया गया। बैण्ड बाजे, इन्द्रध्वजा, अश्वारोही सहित अपार जन समूह ने गगनचुम्बी जयघोष से आकाश गुंजायमान कर दिया। मस्तक पर मंगल कलश धारण करती हुई महिलाएं व पुरूष कतारबद्ध होकर वरघोड़े की शोभा में अभिवृद्धि कर रहे थे। नगर के विभिन्न प्रमुख मार्गो का परिभ्रमण करते हुए शोभा यात्रा दादावाड़ी पहुंच कर धर्म सभा में परिवर्तित हो गई। दादावाड़ी के श्री सुखसागर प्रवचन स्थल के सुसज्जित मंच पर साध्वी समुदाय विराजमान थे। क्षमा पर्व के उपलक्ष में साध्वीजी श्री डॉ. नीलांजनाश्री ने मार्मिक उद्बोधन दिया। अनेक वक्ताओं ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए करबद्ध क्षमा याचना की।

कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल 2016-2019

1. श्री मोहनचंदजी ढड्ढ, चेन्नई, संरक्षक
2. डॉ. जितेन्द्र शाह, अहमदाबाद, संरक्षक
3. श्री मेवारामजी बोहरा, बाड़मेर संरक्षक
4. श्री भंवरलालजी छाजेड़, मुम्बई, अध्यक्ष
5. श्री संघवी तेजराजजी गुलेच्छा, बैंगलोर, वरि. उपा.
6. श्री मनोहरलालजी कानूगो, मुम्बई, उपाध्यक्ष
7. श्री द्वारकादासजी डोसी, बाड़मेर, उपाध्यक्ष
8. श्री बाबूलालजी डोसी, जयपुर, उपाध्यक्ष
9. श्री बाबुलालजी लुणिया, अहमदाबद, उपाध्यक्ष
10. श्री मांगीलालजी मालू, सुरत, महामंत्री
11. श्री सम्पतराजजी बोथरा, दिल्ली, सचिव
12. श्री रतनलालजी संकलेचा,बाड़मेर, सचिव
13. श्री बाबुलालजी टी, बोथरा, बाड़मेर, कोषाध्यक्ष
14. श्रीबाबुलालजी नेमिचन्द छाजेड़, मुम्बई, सह-कोषा.
16. श्री सुरेशजी लुणिया, चैन्नई, सह-कोषाध्यक्ष
16. श्री शंकरलालजी धारीवाल, बाड़मेर, निर्माण मंत्री
17. श्री केवलचन्दजी छाजेड़, बाडमेर, प्रचार मंत्री
18. श्र राणमलजी संकलेचा, बाड़मेर, सलाहकार
19. श्री धर्मचन्दजी छाजेड़, जोधपुर, सलाहकार
20. श्री प्रकाशजी कानूगो, मुम्बई, सलाहकार
21. श्री राजभाई लोढ़ा, उदयपुर, सलाहकार
22. श्री उदयराजजी जैन, जोधपुर, सलाहकार
23. श्री भंवरलालजी सेठिया, बाड़मेर, सलाहकार

ट्रस्टी

24. श्री विजयराजजी डोसी, बैंगलोर
25. श्री अमृतलालजी छाजेड़, बाड़मेर,
26. श्री अशोकजी भंसाली, अहमदाबाद,
27. श्री बाबुलालजी छाजेड़, नवसारी
28. श्री बाबुलालजी मालु, सुरत
29. श्री बाबुलालजी मरडिया, मुम्बई
30. श्री ओमप्रकाशजी लालचंदजी मण्ड़ोरा, सुरत
31. श्री प्रकाशचन्दजी लोढा, जयपुर
32. श्री बाबुलालजी सेठिया, बाड़मेर
33. श्री भगवानदासजी मालु, सुरत
34. श्री भीमराजजी बोहरा, जयपुर
35. श्री छगनलालजी माणकमलजी बोथरा, बाड़मेर
36. श्री छगनराजजी घीया, सुरत
37. श्री चम्पालालजी छाजेड़ बाड़मेर
38. श्री दानमलजी डूंगरवाल, जोधपुर
39. श्री दीपचन्दजी बाफना, अहमदाबाद
40. श्री गौतमचन्दजी वडेरा, इच्लकरणजी
41. श्री गौतमचन्दजी हालावाला, सुरत
42. श्री घेवरचन्दजी मरडीया, सुरत
43. श्री हस्तिमलजी बोथरा, दिल्ली
44. श्री जगदीशचन्द्रजी केशरीमलजी बोथरा, बाड़मेर
45. श्री जगदीशजी भंसाली, पाली
46. श्री जवेरीलालजी देसाई, सुरत
47. श्री केलाशचन्द्र जगदीश जी धारीवाल, बाड़मेर
48. श्री केलाशजी कोटडीया, बाड़मेर
49. श्री लूणकरणजी बोथरा, बाड़मेर

50. श्री मदनलालजी मालू, जोधपुर
51. श्री मुलचन्दजी संकलेचा बालोतरा
52. श्री ओमप्रकाशजी छाजेड़, इच्लकरणजी
53. श्री पारसमलजीकेशरीमलजी धारीवाल, जोधपुर
54. श्री आर.आर. भंसाली, कोलकता
55. श्री राजेन्द्रजी संकलेचा, इरोड
56. श्री रमेशजी जिवराजजी श्रीश्रीमाल, मुम्बई
57. श्री रमेशजी मरडीया, सुरत
58. श्री रमेशजी सराफ, बाड़मेर
59. श्री सुरेशकुमारजी कांकरिया, रायपुर
60. श्री रतनलालजी हालावाला, अहमदाबाद
61. श्री रतनलालजी सेठिया, त्रिपुर,
62. श्री रतनलालजी वडेरा, बाड़मेर
63. श्री सज्जनराजजी मेहता, बाड़मेर
64. श्री सम्पतराजजी धारीवाल, सुरत
65. श्री सम्पतराजजी आर. मेहता, बाड़मेर
66. श्री शंकरलालजी बोथरा, बाड़मेर
67. श्री शांतिलालजी छाजेड़ मालेगांव
68. श्री त्रिलोकचन्दजी बरडीया, रायपुर
69. श्री घेवरचन्दजी धारीवाल, अहमदाबाद
70. श्री गेनीरामजी मालु, जोधपुर

तलोदा में चातुर्मास की धूम

तलोदा में गुरूवर्या श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. एवं दीपमालाश्रीजी म.सा. का चातुर्मास बड़े ही धूमधाम से चल रहा है। यहाँ मासक्षमण की विरहमान, अट्ठाई, सोलह उपवास, सोलह कशाय, अक्षयनिधि, संमवशरण, मोक्ष तप जैसे तप हुये। सामूहिक तेले एवं आर्यंबिल भी अच्छी संख्या में सम्पन्न हुये। यहाँ तेले और आर्यंबिल की लड़ी चल रही है। बकरी ईद के निमित्त सामूहिक आर्यंबिल करवाये गये। उस दिन 80 से 85 आर्यंबिल हुये। सीमंधर स्वामी की भावयात्रा बड़ी धूमधाम से मनाई गई। अष्टप्रकारी पूजा का महाआयोजन हुआ। खरतरगच्छ दिवस बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। उस दिन नाटिका हुई। रविवार को बच्चों का शिविर, शनिवार को महिला शिविर और प्रतिदिन सुबह युवा वर्ग की क्लास और दोपहर में महिलाओं की तत्वज्ञान की क्लास चलती है। भक्तामर प्रवचन और प्रतिक्रमण प्रतिदिन चलता है। यहाँ पर्वाधिराज पर्युषण पर्व भी बड़े ही धूमधाम से एवं हर्ष और उल्लस के साथ सम्पन्न हुआ।

अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा का गठन

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा का तीन वर्ष के लिये गठन किया गया। साथ ही निर्णय लिया गया कि खरतरगच्छीय शास्त्रीय सुविशुद्ध परम्परा के आधार पर पंचांग का प्रकाशन पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री के आदेश से उनके द्वारा प्रमाणित रूप से प्रतिनिधि महासभा द्वारा किया जायेगा।

इस विषय में पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया– हर समुदाय, गच्छ व संप्रदाय की अपनी एक परम्परा है कि पंचांग का निर्धारण गच्छाधिपति आचार्य भगवंत ही करते हैं। खरतरगच्छ परम्परा में भी वर्षों की यह परम्परा रही है कि खरतरगच्छीय पंचांग का प्रमाणित प्रकाशन पूज्य गच्छाधिपतिश्री के आदेश से ही होता आया है। इस परम्परा का पालन करते हुए पंचांग का प्रकाशन होना है। उन्होंने भारत भर के समस्त श्री संघों को आदेश दिया कि प्रतिनिधि महासभा द्वारा उनके आदेश से होने वाले पंचांग को ही खरतरगच्छ परम्परा का मान्य पंचांग ही प्रमाणित माना जायेगा। उसके आधार पर ही श्री संघ को आराधना करनी है। वीर संवत् के आधार पर प्रकाशित होने वाले इस पंचांग में तिथि निर्धारण इस दीपावली से अगले वर्ष की दीपावली तक होगा। इस पंचांग में अन्य सारी उपयोगी सामग्री दी जायेगी। पंचांग का वितरण समग्र भारत में किया जायेगा।

अध्यक्ष महोदय श्री झाबकजी ने बताया कि वे महासचिव श्री संतोषजी गोलेच्छा, उपाध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी सुराणा व सदस्यों के साथ अतिशीघ्र बाडमेर, बालोतरा, जयपुर, जोधपुर, दिल्ली आदि क्षेत्रों का भ्रमण कर साधु साध्वीजी भगवंतों के दर्शन कर चर्चा कर उनसे आशीर्वाद ग्रहण करेंगे तथा स्थानीय संघों के साथ गच्छ विकास हेतु चर्चा विचारणा करेंगे। महासभा में निम्नलिखित सदस्यों का चयन किया गया।

श्री मोहनचंदजी ढड्ढा, चेन्नई– संरक्षक
श्री मोतीचंदजी झाबक, रायपुर– अध्यक्ष
श्री विजयराजजी डोसी, बैंगलोर– वरिष्ठ उपाध्यक्ष

क्षेत्रीय उपाध्यक्ष–

श्री भंवरलालजी छाजेड, मुंबई – महाराष्ट्र
श्री प्रकाशचंदजी सुराणा, रायपुर – छत्तीसगढ
श्री भूरचंदजी जीरावला, जोधपुर – राजस्थान
श्री मांगीलालजी मालू, सूरत – गुजरात
श्री वीरेन्द्रमलजी मेहता, चेन्नई – तमिलनाडु
श्री कुशलचंदजी गोलेच्छा, बैंगलोर – कर्णाटक
श्री बाबुलालजी संखलेचा, हैदराबाद– आंध्र प्रदेश
श्री विजयमलजी लोढा, कोलकाता– पं. बंगाल
श्री हीरालालजी मुसरफ, दिल्ली– दिल्ली
श्री संतोषकुमारजी गोलेच्छा, रायपुर– महामंत्री
श्री पदमकुमारजी टाटिया, चेन्नई– मंत्री
श्री रतनलालजी बोहरा, अहमदाबाद– कोषाध्यक्ष
श्री बाबुलालजी मरडिया, मुंबई– सहकोषाध्यक्ष
श्री ज्योतिकुमारजी कोठारी, जयपुर– प्रचार प्रसार मंत्री
श्री महावीरजी छाजेड, पूणे– सांस्कृतिक मंत्री

सदस्य

श्री विमलचंदजी सुराणा जयपुर, श्री तेजराजजी गुलेच्छा बैंगलोर, श्री वंसराजजी भंसाली अहमदाबाद, श्री तिलोकचंदजी बरडिया रायपुर, श्री प्रकाशचंदजी कानूगो मुंबई, श्री दीपचंदजी बाफना अहमदाबाद, श्री बाबूलालजी लूणिया अहमदाबाद, श्री विजयचंदजी गोलेच्छा धमतरी, श्री गौतमचंदजी कवाड तिरूपातूर, श्री बाबुलालजी पालरेचा हॉस्पेट, श्री गजेन्द्रजी भंसाली उदयपुर, श्री महेन्द्रजी रांका बैंगलोर, श्री ज्ञानचंदजी कोठारी दुर्ग, श्री द्वारकादासजी डोसी बाडमेर, रतनलालजी संकलेचा बाडमेर, श्री पुखराजजी श्रीश्रीमाल नंदुरबार, श्री उत्तमचंदजी रांका चेन्नई, श्री मनोहरजी कानूगो मुंबई, श्री सुरेशजी कांकरिया रायपुर, श्री बृजेन्द्रसिंहजी लोढा, आगरा, श्री मूलचंदजी लूणिया दुर्ग, श्री कैलाशजी संकलेचा चेन्नई, श्री सुरेशजी लूणिया चेन्नई, श्री योगेशजी बरडिया गोंदिया, श्री जसराजजी छाजेड इचलकरंजी, श्री गौतमजी वडेरा इचलकरंजी, श्री बाबुलालजी छाजेड मुंबई, श्री तिलोकचंदजी पारख रायपुर, श्री संतोषकुमारजी लोढा दुर्ग, श्री कांतिलालजी बोथरा दुर्ग, श्री संपतराजजी धारीवाल सूरत, श्री लूणकरणजी बोथरा बाडमेर, श्री बाबुलालजी बोथरा बाडमेर, श्री संपतराजजी बोथरा दिल्ली, श्री रिखबराजजी भंसाली जोधपुर, श्री सुनीलजी चोरडिया कोलकाता, श्री पुखराजजी तातेड अहमदाबाद, श्री रमेशजी मरडिया सूरत, श्री रतनजी बोथरा अहमदाबाद, श्री रतनलालजी बालड सूरत, श्री घेवरचंदजी मरडिया सूरत, श्री जवेरीलालजी देसाई सिणधरी, श्री छगनजी घीया भियाड सूरत, श्री बाबुलालजी मालू सूरत, श्री गौतमजी हाला वाले सूरत, श्री संतोषकुमारजी बैद रायपुर, श्री महेन्द्रजी कोचर रायपुर, श्री नरेशजी शंकलेशा कल्याण को सम्मिलित किया गया।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की कार्यकारिणी का गठन

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री जिनदत्त–कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की कार्यकारिणी का आगामी कार्यकाल के लिये गठन किया गया।

श्री मोहनचंदजी ढड्ढा, चेन्नई – संरक्षक
श्री तेजराजजी गुलेच्छा, बैंगलोर – अध्यक्ष
श्री भंवरलालजी छाजेड, मुंबई –वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री पदमकुमारजी टाटिया, चेन्नई – महामंत्री
श्री बाबुलालजी मरडिया, मुंबई – मंत्री
श्री दीपचंदजी बाफना, अहमदाबाद– कोषाध्यक्ष
श्री गजेन्द्रजी भंसाली, उदयपुर– सहकोषाध्यक्ष

उपाध्यक्ष

श्री प्रकाशचंदजी कानूगो, मुंबई
श्री रिखबराजजी भंसाली, जोधपुर
श्री अशोकजी भंसाली, अहमदाबाद
श्री उत्तमचंदजी रांका, चेन्नई
श्री तिलोकचंदजी बरडिया, रायपुर

ट्रस्टी

श्री वंसराजजी भंसाली, अहमदाबाद
श्री विमलचंदजी सुराणा, जयपुर
श्री वीरेन्द्रमलजी मेहता, चेन्नई
श्री विजयराजजी डोसी, बैंगलोर
श्री मनोहरजी कानूगो, मुंबई
संघवी श्री कुशलराजजी गुलेच्छा, बैंगलोर
श्री हंसराजजी डोसी, बैंगलोर
श्री सुबोधचंदजी बोथरा, ग्वालियर
श्री महावीर स्वामी जैन देरासर ट्रस्ट,पायधुनी, मुंबई
श्री बाबुलालजी पालरेचा, हॉस्पेट
श्री जवाहरलालजी देशलहरा, मुंबई
श्री बाबुलालजी लूणिया, अहमदाबाद
श्री बाबुलालजी छाजेड, मुंबई
श्री महेन्द्रजी रांका, बैंगलोर
श्री सुनीलजी चौरडिया, कोलकाता
श्री महावीरजी डागा, जयपुर
श्री सुरेशजी लूणिया, चेन्नई
श्री दीपचंदजी कोठारी, ब्यावर
श्री कैलाशजी संकलेचा, चेन्नई

साथ ही परम संरक्षक व संरक्षक कार्यकारिणी के स्थायी सदस्य होंगे। पेढी के अन्तर्गत विक्रमपुर तीर्थ के पुनरूद्धार का कार्यक्रम चल रहा है। इस योजना के लिये श्री मोहनचंदजी ढड्ढा के नेतृत्व में समिति का गठन किया गया। समिति के चेयरमेन श्री मोहनचंदजी ढड्ढा होंगे। यशवर्धन गोलेच्छा फलोदी, रवीन्द्र बच्छावत फलोदी, राजेश गुलेच्छा चेन्नई एवं हेमचंदजी इस समिति में सदस्य होंगे। विक्रमपुर में तीर्थ के पुनरूद्धार का कार्य तीव्र गति से प्रारंभ है। प्रथम चरण में जिन मंदिर, दादावाडी, धर्मशाला, भोजनशाला का निर्माण कार्य प्रारंभ है।

पूज्य जयानन्द मुनि जी की 11 वीं पुण्यतिथि सम्पन्न

परम पूज्य श्री जयानन्द मुनि श्री 11 वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 20 सितम्बर, 2016 को मोती डूंगरी दादाबाडी, जयपुर में श्रीमाल सभा के तत्त्वावधान में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया परम पूज्य श्री जयानन्द मनि खरतरगच्छीय परंपरा के अद्भुत एवं अवधूत योगी थे। कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री पारस महमवाल, कार्यक्रम संयोजक ने मंगलाचरण के द्वारा किया। कोलकत्ता खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष श्री विनोदचन्द जी बोथरा एवं कोलकाता के स्वनामधन्य राय बद्रीदास बहादूर मुकीम परिवार के श्री अशोक कुमार जी मुकीन ने परम पूज्य श्री जयान्नद मुनि के आगे दीप प्रज्वलित किया शंखेश्वर से पधारे हुए प्रसिद्ध भक्तिरस गायक मेहुल ठाकुर ने शास्त्रीय संगीत में पूज्य जयानंद जी महाराज के प्रिय भजनों का गयान किया। वाचक यशोविजय जी कृत 'हम तो मगन भये प्रभु ध्यान में' श्रीमद देवचंद जी चौवीसी के भजन 'जगत दिवाकर जगत कृपानिधि' ने सबका मन मोह लिया। उन्होंने आनंदघनजी कृत कई भजन भी गाये। जयपुर के प्रसिद्ध कलाकार गौरव जैन एवं उनकी पत्नी दीपशिखा जैन ने भी प्रस्तुति दी, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री विनय जी चोरडिया एवं विशिष्ट अतिथि श्री बाबूलाल जी दोषी व श्री कुशलचन्द जी महमवाल थे। भक्ति संध्या का समापन मेहुल ठाकुर ने 'म्हारा प्रभुनी वधाई बाजे छे' से की संचालन पारस महमवाल ने किया। – ज्योति कोठारी

छत्तीसगढ़ के अहिवारा में केयुप का गठन

अहिवारा में केयुप का गठन किया गया जिसमें संरक्षक लाभचंद जी खजांची अध्यक्ष युगल श्रीश्रीमाल उपाध्यक्ष अजित कोचर रोनक बाफना सचिव रमेश बोहरा सहसचिव श्री पाल बोहरा प्रचार मंत्री राजू बोहरा कोषाध्यक्ष गौरव नाहटा वैयावच्च मंत्री सुरेश नाहटा एवं मनीष बडेर कुणाल जैन जयंत छाजेड़ राजा सोनी हिमांशु रत्न बोहरा राकेश बडेर भूपेंद्र नाहटा अभिषेक बाफना राजा बरमेचा जिनेद्र खजांची मयंक जैन अशोक बोहरा गोलू बाफना अंकित बाफना जीतू बोहरा आकाश बोहरा कमलेश कोचर ललित कोचर आकाश सोनी हर्ष बुरड़ हुकुम बडेर को सदस्य बनाया गया।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर दवाई की दुकान पर खडा था। उसे एक दवाई खरीदना था। पहली बार किसी दवाई की दुकान पर आया था।

डॉक्टर के हाथ की पर्ची को केमिस्ट के हाथों में थमाते हुए दवाई देने को कहा।

केमिस्ट ने लिखी दवाई को कागज की थैली में पेक किया... उसे थैली दी... बिल दिया और रूपये लेकर गिनने लगा।

जटाशंकर ने थेली को खोल कर दवाई चेक की। उस पर लिखा नाम पढ़ा। तभी उसकी नजर उस दवाई पर अंग्रेजी में बडे अक्षरों में लिखे दो शब्दों पर पडी।

वह केमिस्ट से बोला– भैया! दवाई के साथ चीनी भी तो दो!

केमिस्ट बोला– यह दवाई की दुकान है। यहाँ चीनी नहीं मिलती।

जटाशंकर बोला– तुमने हमें क्या पागल समझा है! दवाई की इस शीशी पर सापफ लिखा है– शुगर प्रफी! शुगर तो तुम्हें देनी ही पडेगी।

केमिस्ट को इस शब्द का अर्थ समझाने में पसीना आ गया।

हास्यप्रद यह घटना हमें एक संदेश देती है। सही अर्थ समझना, हर किसी के वश में नहीं! शास्त्राों के अर्थ सही नहीं समझ पाने के कारण ही तो धर्म बंटता जा रहा है।

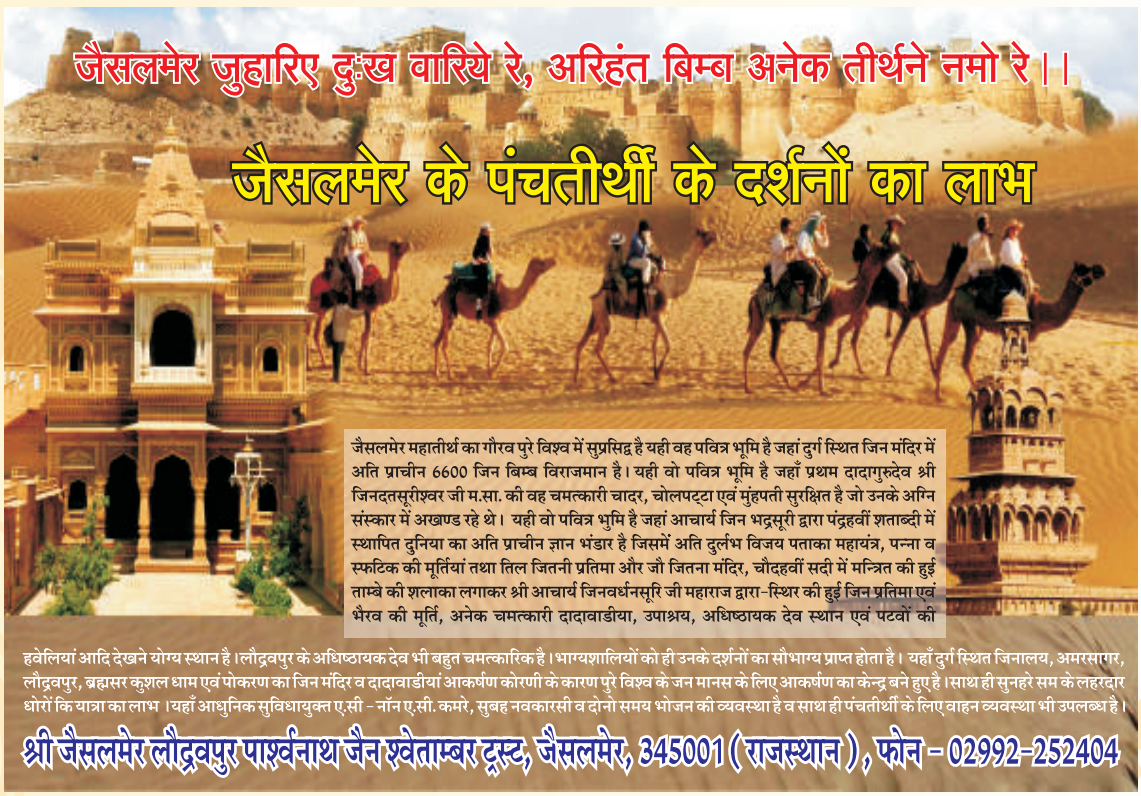

दुर्ग में केयुप का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरनी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408